वर्ष 05 अंक 06 जून 2023 पृष्ठ 36

समाचार पत्र पंजी. संख्या : DELHIN/2018/76804

इन्द्रप्रस्थ संवाद

सावन भगवान शिव एवं प्रकृति का उत्सव

/ivskdelhi /ivskdelhi /ivskdelhi /ivskdelhi /ivskdelhi.in

आओ पेड़ लगाएं
प्रकृति हैं
तो हम है
इस मानसून अपने घर, पार्क या
सड़क के किनारे में आओ एक पेड़
लगाएं पर्यावरण के प्रति अपना दायित्व निभायें

IVSK

समाचार पत्र पंजी. संख्या : DELHIN/2018/76804

इन्द्रप्रस्थ संवाद

जुलाई – 2023

संपादक
बिपिन कुमार तिवारी

प्रबंधक, मुद्रक एवं प्रकाशक
रघुवीर कुमार गम्भीर

संपादकीय कार्यालय
इंद्रप्रस्थ संवाद, 8 बी/6428–29, प्रथम तल, आर्यसमाज रोड, देवनगर, नई दिल्ली–110005
दूरभाष : 9136292824, 9717211723
वेबसाईट : www.ivskdelhi.in

प्रसार एवं विज्ञापन हेतु संपर्क
isamvad@gmail.com

इंद्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक रघुवीर कुमार गम्भीर द्वारा एम.के प्रिंटर्स 5516/5 न्यू चंद्रावल, दिल्ली–7 से मुद्रित एवं 8–बी/6428–29 आर्य समाज रोड, देवनगर, नई दिल्ली–110005 से प्रकाशित
संपादक : बिपिन कुमार तिवारी
(पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए उत्तरदायी

इन्द्रप्रस्थ संवाद पत्रिका के मई 2023 के अंक को अपने मोबाइल फोन में पढ़ने के लिए अपने मोबाइल के कैमरा से यहां दिए गए क्यू आर कोड (QR Code) को स्कैन करें।

सभी लेखों में लेखकों के स्वतंत्र विचार हैं। संपादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

इस अंक में ....

आवरण कथा 06

जालियावाला बाग हत्याकांड का बदला देने वाले क्रांतिकारी ऊधम सिंह	07
कारगिल विजय दिवस	08
धर्म परिवर्तन के खतरनाक परिणाम	09
मीम-भी गठजोड़ क छद्म नारे के पीछे छिपी साजिश को समझें	10
संस्कार का केंद्र है परिवार	11
जल स्रोत एवं वर्ष जल संचय का अनूठा प्रयोग	12
स्वदेशी यानी स्व का बोध	13
संघ ने भगवा ध्वज को ही अपना गुरु क्यों माना?	14
महिलाओं को आर्थिक रुप से सक्षम बनाना जरूरी	15
त्याग, तपस्या और बलिदान का प्रतीक गुरुद्वारा शीशगंज साहिब	16
मराठों की दिल्ली	18
किन्नर कैशल	20
बेटियों के भविष्य के लिए है सुकन्या समृद्धि योजना	21
हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र में बना सकते हैं अपना कैरियर	22
कारपेंटर और प्लम्बर के क्षेत्र में रोजगार	23
बरसात के मौसम में होने वाली बीमारियां कारण और बचाव	25
लव हिजाद की भेंट चढ़ी 16 वर्षीय लड़की	26
एकरस हिन्दू समाज बनाने की आवश्यकता	27
खेल -खेल में बच्चों को सिखएं	28
शिक्षा की प्रकाश फैला रहे मास्टर रघुवीर सिंह	30
स्वाद भी स्वास्थ्य थी	31
प्रेरक कहानी	32
बाल मंच	33

हमसे जुड़ें

यदि आप लिखते हैं तो आप अपना लेख या कविता हमें ईमेल या व्हाट्सएप्प के माध्यम से भेजें। आप अपनी कॉलोनी / बस्ती से जुड़े समाचार तथा उत्सवों, प्रेरणादायक कार्य/उपलब्धि, सेवा कार्य, पर्यावरण इत्यादि से संबंधित सूचना हम तक पहुचाएं। आप इन्द्रप्रस्थ संवाद में छपे लेखों पर भी अपने विचार हम तक अवश्य भेजें।

Email – isamvad@gmail.com   WhatsApp No. - 9717575649

पाठकनामा

इन्द्रप्रस्थ संवाद अपने पाठकों के विचार को बहुत महत्त्व देता है। अपने नियमित पाठकों से उनके विचार को जानने के उद्देश्य से इन्द्रप्रस्थ संवाद पत्रिका संपादक मंडल के सदस्यों ने पाठकों से बातचीत कर पत्रिका के बारे में उनके अनुभव, सुझाव एवं विचार जाना। पाठकों से हुई बातचीत के अंश –

मेरा नाम नीरज कुमार है मैं एक निजी कंपनी में काम करता हूं और हिम्मतपुरी मयूर विहार में रहता हूं। मैं नियमित तौर पर इंद्रप्रस्थ संवाद पत्रिका पढ़ता हूं। इस पत्रिका में समाज से जुड़े अनेक विषयों की महत्वपूर्ण जानकारी मिलती है।मेरा सुझाव हैं कि पत्रिका के स्वास्थ्य कॉलम में शरीर को स्वस्थ्य रखने के उपायों पर जानकारी का प्रकाशन होना चाहिए। हम अपने शरीर के अंगों को विभिन्न प्रकार की बीमारियों से कैसे बचा सकते हैं इस विषय पर भी चिकित्सक की सलाह का प्रकाशन होना चाहिए।

नीरज कुमार, 33/47 हिम्मतपुरी, मयूर विहार, पूर्वी दिल्ली

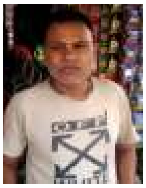

मेरा नाम सूदन पासवान है मैं जेजे कॉलोनी आनंदविहार में रहता हूं। हमारी बस्ती में नशे की गंभीर समस्या से ग्रस्त है। नशे के कारण युवा बर्बाद हो रहे है और गलत गतिविधियों में लगे हुए है। इंद्रप्रस्थ संवाद पत्रिका का मैं नियमित पाठक हूं। मेरा सुझाव हैं कि जेजे कॉलोनियों के युवाओं को कैसे नशे से दूर कर रोजगार से जोड़ा जाए इस विषय पर भी पत्रिका में लेख होना चाहिए। पत्रिका के मई अंक में लव जिहाद और वीर सावरकर पर लेख बहुत अच्छे थे।

सूदन पासवान, जेजे कॉलोनी, आनंद विहार, पूर्वी दिल्ली

मेरा नाम महेंद्र राय है मैं नियमित तौर पर इंद्रप्रस्थ संवाद पत्रिका पढ़ता हूं। इस पत्रिका में समाज के बारे में बहुत अच्छे लेख होते है। वीर सावरकर और डॉक्टर अंबेडकर पर पत्रिका में अच्छे लेख थे। मेरी अपनी बस्ती के विकास को लेकर एक शिकायत है यहां एमसीडी साफ–सफाई एवं स्वच्छता पर ध्यान नहीं देती। इन बस्तियों में पार्षदगण भी ध्यान नहीं देते। यहां पॉर्कों की हालत भी बहुत खराब है एमसीडी को यहां काम करने की आवश्यकता है।

महेंद्र राय, मंगोलपुरी, दिल्ली

मेरा नाम तेजपाल है मैं जेजे कंेप आनंद विहार का निवासी हूं। मैं इंद्रप्रस्थ संवाद पत्रिका नियमित तौर पर पढ़ता हूं। पत्रिका में बहुत ज्ञानवर्धक जानकारी रहती है। मेरे मित्र भी इस पत्रिका को पढ़ने के लिए ले जाते है। मेरा सुझाव हैं कि इस पत्रिका में जेजे बस्तियों में साफ सफाई एवं स्वच्छता पर भी जानकारी होनी चाहिए। इन बस्तियों में गंदगी के कारण बीमारियां पनपती है और चारों तरफ मच्छरों का प्रकोप फैला रहता है यहां नालियां भी साफ नहीं होती। कृपया पत्रिका में जेजे बस्तियों की इन समस्याओं पर भी लेख होने चाहिए ताकि प्रशासन साफ सफाई पर ध्यान दें।

तेजपाल, आनंद विहार, पूर्वी दिल्ली

मेरा नाम विमला है,मैं एलईडी बल्ब बनाने का काम करती हूं और सुदर्शन पॉर्क मोतीनगर में रहती हूं। मैं इंद्रप्रस्थ संवाद पत्रिका की नियमित पाठक हूं। मेरे बच्चे भी बड़े चाव से यह पत्रिका पढ़ते है। पिछले अंक में डॉक्टर भीमराव अंबेडकर पर पत्रिका में बहुत अच्छी जानकारी दी गई थी। इस पत्रिका में सामाजिक जानकारी एवं स्वास्थ्य के विषयों पर बहुत अच्छे लेख रहते है। पत्रिका के माध्यम से मेरा सुझाव हैं कि सरकार जेजे बस्तियों में बिजली की व्यवस्था को ठीक करें एव जिनके पास बिजली नहीं है उनके घर बिजली उपलब्ध कराने का काम करें।

विमला देवी
डब्ल्यू जेड– 144/19
सुर्दशन पॉर्क मोती नगर,

बातचीतकर्ता मनोज शर्मा 'मन' रघुबीर कुमार गंभीर, नरेन्द्र वर्मा एवं सत्यप्रकाश

इन्द्रप्रस्थ संवाद पत्रिका में प्रकाशित लेखों को लेकर आपके जो भी विचार या सुझाव हों आप हमें व्हाट्स एप्प या ईमेल के माध्यम से भेज सकते हैं

व्हाट्स एप्प नंबर – 9717575649   ईमेल – isamvad@gmail.com

धर्मांतरण का खतरनाक रैकेट

मई माह में आई द केरल स्टोरी फिल्म में हम सबने केरल में आई एस आई एस के इशारे पर चल रहे लव जिहाद की खतरनाक साजिश को देखा। फिल्म के माध्यम आज देश की जनता को मालूम हो गया है की कैसे जिहादियों द्वारा हिन्दू बेटियों को लव जिहाद की चंगुल में फसाकर उनका धर्मांतरण कराया गया फिर नरकीय जीवन जीने के लिए उन्हें आतंकी संगठन आई एस आई एस के हवाले कर दिया गया। आई एस आई एस द्वारा उन्हें सेक्स स्लेव (सेक्स गुलाम) बना लिया जाता और आई एस आई एस के जिहादी आतंकी रोज उनका बलात्कार करते।

अभी हम इस हृदयविदारक सदमे से निकल भी नहीं पाए थे की दो तीन ऐसी घटनाएँ सामने आई जिससे लगता है की देश में कई संगठित धर्मांतरण रैकेट सक्रिय है।

मध्य प्रदेश के दमोह जिले में गंगा जमुना हाई स्कूल का एक पोस्टर विवादों में आया था, जिसमें हिंदू बालिकाओं के हिजाब से मिलता जुलता स्कार्फ पहने दिखाया गया था उसके बाद स्कूल शिक्षा विभाग ने पहले क्लीन चिट दी मगर बाद में उसकी मान्यता ही निलंबित कर दी गई। इतना ही नहीं इस स्कूल की कई शिक्षिकाओं का धर्म परिवर्तन कराए जाने के आरोप लगे इन शिक्षिकाओं ने समाने आकर विद्यालय में पढ़ाने आने से पहले ही धर्म परिवर्तन की बात स्वीकारी इतना ही नहीं कई बच्चों ने यह आरोप भी लगाए थे कि उन्हें नमाज तक पढ़ने के मजबूर किया जाता था, साथ ही इस्लामिक आयतें पढ़ने का दवाब बनाया जाता था। राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग की रिपोर्ट में बताया गया है कि गंगा–जमुना स्कूल के अंदर से एक गुप्त रास्ता मजिस्द के लिए बनाया गया था। स्कूल में कई जगह पर कुरान की आयतें भी लिखी हैं। मामला सामने आने के बाद इन्हें पेंट करवाकर छिपाने की कोशिश की गई है।

गाज़ियाबाद का मामला में आया जिससे ऑनलाइन गेम के माध्यम से धर्मांतरण का षडयंत्र प्रकाश में आया। राजनगर निवासी उद्योगपति ने अपने नाबालिग बेटे के धर्म परिवर्तन का आरोप लगाते हुए संजय नगर स्थित मस्जिद की कमेटी के पूर्व सदस्य और मुंबई निवासी शाहनवाज उर्फ़ बद्दो के खिलाफ केस दर्ज कराया था। पुलिस ने 4 जून को धर्मांतरण गिरोह का खुलासा कर एक मौलवी अब्दुल रहमान को जेल भेजा था।

शाहनवाज किशोरों को ऑनलाइन गेम में पहले हरवा देता था। फिर कहता था कि कुरान की आयत पढ़कर खेलो, जीत जाओगे। इस तरह किशोरों को बहकाकर उनका धर्मांतरण करवा देता था। राजनगर के किशोर के साथ भी ऐसा ही किया। किशोर घर से जिम जाने के लिए कहकर निकलता था और नमाज पढ़ने पहुंच जाता था। अब तक वह कई बच्चों का धर्मांतरण करा चूका है।

इसी बीच राजधानी दिल्ली के चांदनी महल क्षेत्र के तुर्कमान गेट स्थित रैन बसेरा में चल रहे धर्मांतरण के खेल का खुलासा हुआ है। रैन बसेरा के केयर टेकर सहित तीन युवको ने मोहम्मद कलीम पर धर्मांतरण कराने का प्रयास करने का आरोप लगाया है। मोहम्मद कलीम कम पढ़े दृ लिखे लोगों को लालच देकर उनका धर्मांतरण करा रहा था। वह कई मदरसा चालकों के संपर्क में भी था तथा कई व्हाट्सएप्प ग्रुप चलता तथा जिसमे वह जाकिर नाईक का विडियो डालता था।

इन मामलों से यह बात स्पष्ट हो रही है की धर्मांतरण का यह खतरनाक रैकेट हमारे चारों तरफ फैला हुआ है। हिन्दू समाज को सतर्क रहने एवं अपने आँख दृ कान खोले रखने की जरुरत है। समरस एवं एकजुट हिन्दू समाज ही इन जिहादी मानसिकता को रोक सकता है।

जय हिन्द।

– बिपिन कुमार तिवारी

प्रकृति और भगवान शिव को समर्पित सावन माह

नरेन्द्र कुमार वर्मा

सावन (श्रावण) माह को हिंदु धर्म में बहुत पवित्र माना जाता है। भगवान भोले शंकर की पूजा अर्चना और प्रकृति के उत्सव को इस माह में मनाया जाता है। आसमान में उमड़ते बादल, खेतों में मिट्टी की सोंधी खुशबू, हरे–भरे वृक्ष और चारों तर हरियाली ही हरियाली सावन माह के आनंद को दोगुना कर देती है। सारा वातावरण ऐसा लगता है कि मानों किसी ने पृथ्वी का श्रृंगार कर दिया है।

हिंदु पंचाग के पांचवें महीने को सावन माह कहा जाता है। भगवान शिव की भक्ति के लिए यह माह सर्वश्रेष्ठ कहा जाता है। शास्त्रों के अनुसार समस्त प्रकृति को ही भगवान शिव का रुप कहा जाता है। सावन माह से ही बरसात के चार माह (चौमासा) शुरू हो जाते है। इसी माह से किसान खेतों की मेढ़ों पर वृक्षारोपण शुरू करते है और धान की बुआई शुरू हो जाती हैं। सावन माह में सृष्टि के पालनकर्ता भगवान शिव को समर्पित करने के लिए हिंदु कांवड़ लेकर आते हैं। कांवडियों की यात्रा इस माह को आध्यात्मिक आस्था में डूबो देती है। शहरों से गुजरने वाले कांवड़ यात्री बम–बम भोले,हर–हर महादेव और बोल बम के जयकारे लगाते हुए जब निकलते है तो सारा माहौल भक्ति से सराबोर हो जाता है। सावन माह में कांवड़ियों के बीच एक बहुत बड़ी सामाजिक समरसता देखने को मिलती है। हिंदु धर्म से जुड़ी अनेक छोटी–बड़ी जातियों के लोग पूर भक्ति भाव के साथ कांवड़ लेकर आते हैं। कांवड़ यात्रा में कोई ऊंचनीच, छोटे बड़े का भेदभाव नहीं होता। सभी कांवड़यात्री एक साथ बम–बम भोले के जयकारे लगाते हुए अपने–अपने शहरों के शिवालयों में पहुचंते हैं। कांवड़ यात्रा में पर्यावरण और प्रकृति की रक्षा, बालिका संरक्षण, पशुपक्षियों के प्रति स्नेह और हिंदु धर्म से जुड़ी अनेक झांकियों के भी दर्शन होते है। कांवड़ यात्रा सामाजिक समरसता के साथ ही राष्ट्रभक्ति और अनेकता में एकता का भी संदेश देती है।

कांवड़ यात्रा की विशेष बात यह हैं कि इसके लिए किसी को निमंत्रण या बुलावा नहीं दिया जाता बल्कि स्त्री, पुरुष, बच्चे, युवा और बुजुर्ग स्वतः ही देवाधिदेव शिव की भक्ति के लिए निकल पड़ते हैं। कांवड़ यात्रा अमीर गरीब, अगड़ा–पिछड़ा, दलित स्वर्ण, सबकों एकरस में डूबो देती है। किसी के भीतर एक दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं होती बल्कि सब एक दूसरे के साथ मिलकर हिंदु धर्म की विराटता को बढ़ाते हैं। सारा वातावरण केसरिया रंग में रंग जाता है जो भारत की असीम शक्ति का प्रदर्शन करता है। इस दौरान गंगा, यमुना, कावेरी, शिप्रा, नर्मदा जैसे पवित्र नदियों के तटों पर लाखों कांवड़िये जुटते हैं। सावन माह में छोटे शहरों से लेकर महानगरों एवं ग्रामीण अंचलों में पूरे धूमधाम के साथ कांवड़ यात्रा निकाली जाती है।

सावन माह के आरंभ होने के बाद हिंदु धर्म के अनेक तीज त्योहार शुरू हो जाते है। हरियाली तीज., नागपंचमी, रक्षाबंधन जैसे पर्व इसी माह मनाए जाते है। सावन का महीना खेती–किसानी, प्रकृति, पर्यावरण और जीव–जंतुओं के लिए भी बहुत शुभ माना जाता है। व्यवहारिक, सामाजिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सावन का माह बहुत फलदायी माना जाता है।

जलियावाला बाग़ हत्याकांड का बदला लेने वाले क्रांतिकारी उधम सिंह

डॉ. शब्द प्रकाश

सरदार उधम सिंह का जन्म 26 दिसम्बर 1899 को पंजाब के संगरूर जिले के सुनम गाँव में हुआ था।

13 अप्रैल 1919 को अंग्रेजो के रोलेट एक्ट के विरोध में जलियावाला बाग़ में एक विशाल सभा का आयोजन किया था। उस समय उधम सिंह उस विशाल सभा के लिए पानी की व्यवस्था में लगे हुए थे। अंग्रेज जनरल डायर ने जलियावाला बाग़ में निहत्थे प्रदर्शनकारीयो पर अंधाधुंध गोलिया चलाने का आदेश दिया। डायर के आदेश पर सेना ने 15 मिनट में 1650 राउंड गोलिया चलाई थी और लगभग 3000 निहत्थे लोग उस भारी नरसंहार में मारे गये थे।

उस नरसंहार में शहीद उधम सिंह जीवित बच गये थे और उन्होंने अपनी आँखों से ये नरसंहार देखा था। उधम सिंह उस समय लगभग 11–12 वर्ष के थे और इतनी कम उम्र में उन्होंने संकल्प लिया कि "जिस डायर ने क्रूरता के साथ मेरे देश के नागरिको की हत्या की है इस डायर को मै जीवित नही छोडूंगा और यही मेरे जीवन का आखिरी संकल्प है"।

जलियांवाला बाग हत्याकांड का बदला लेने के लिए जर्मनी चले गये। 1934 से जर्मनी से लन्दन पहुच गये और लन्दन में जाकर वहा पर उन्होंने एक होटल में वेटर का काम किया ताकि कुछ ओर पैसे इकट्ठे कर बन्दुक खरीदी जा सके। उनको ये सब काम करने में पुरे 21 साल लग गये फिर भी उनके मन में प्रतिशोध की ज्वाला कम नही हुयी थी। 13 मार्च 1940 को लन्दन के एक शहर किंग्स्टन में जनरल डायर का बड़ा कार्यक्रम चल रहा था। उस सामरोह

उधम सिंह संकल्प लिया था कि जिस डायर ने क्रूरता के साथ मेरे देश के नागरिको की हत्या की है इस डायर को मै जीवित नही छोडूंगा।

में जनरल डायर का सम्मान किया जा रहा था। उस समारोह के अंत में उधम सिंह अपनी सीट से उठे और तुरंत जनरल डायर पर तड़ातड़ तीन गोलिया चलाई और तीन गोलिया चलाकर डायर को मार दिया। डायर को मारने के बाद भागने के बजाय उन्होंने एक ही वाक्य कहा था "आज मैंने मेरे 21 साल पुराना संकल्प पूरा किया है और मै इसके बाद एक मिनट जिन्दा नही रहना चाहता हूँ "।

जब डायर की मौत की जाँच शुरू हुयी तो उनसे अंग्रेज अफसरों ने डायर को मारने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया "जनरल डायर ने मेरे देश के 3000 निर्दोष भारतवासियों की अकारण हत्या करा दी थी तभी मैंने जनरल डायर को मारने का संकल्प ले लिया था जिसे पूरा करने में मुझे पुरे 21 साल लगे। "मातृभूमि की खातिर मुझे मौत से बड़ा सम्मान और क्या दिया जा सकता है। मैं अपने देश के लिए प्राणों का समर्पण करने जा रहा हूँ।" उन्हें फांसी की सजा सुनाई गयी और 31 जुलाई 1940 को उन्हें लन्दन की जेल में फांसी दिया गया और फिर वही जेल में उनके शव को दफन कर दिया गया।

उनकी मौत के केवल 7 वर्ष बाद भारत अंग्रेजो की गुलामी से आजाद हो गया। 1974 में पंजाब के MLA संधू सिंह के कहने पर उनकी अस्थियो को जमीन खोदकर भारत लाया गया। बाद में उधम सिंह के अवशेषों को अपने जन्म स्थान पर दाह संस्कार किया गया और उनकी अस्थियो को सतलुज नदी में बहा दिया गया। उधम सिंह के नाम पर उत्तराखंड में एक जिले का नाम उधमसिंह नगर रखा गया है।

करगिल विजय दिवस

भारतीय सैनिकों के अदम्य साहस, वीरता की शौर्यगाथा

हरिशंकर

26 जुलाई को देश, विजय दिवस के रूप में कारगिल युद्ध की 24वीं वर्षगांठ मना रहा है। 26 जुलाई 1999 का वह दिन भारतीय सेना के इतिहास में सुनहरे अक्षरों में दर्ज है। कारगिल की ऊंची चोटियों को पाकिस्तान के कब्जे से आजाद करवाते हुए बलिदान देने वाले देश के वीर सपूतों की याद में हर साल कारगिल विजय दिवस मनाया जाता है। भारतीय सैनिकों के अदम्य साहस, वीरता, शौर्य और पराक्रम के सामने पाकिस्तानी सैनिकों ने घुटने टेक दिए थे। उनकी वीरता को याद कर हर हिंदुस्तानी का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है। युद्ध के दौरान, भारतीय सेना ने पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ दिया और ष्ऑपरेशन विजयष के दौरान टाइगर हिल और अन्य चौकियों पर कब्जा करने में सफल रही।

18 हजार फीट की ऊंचाई पर कारगिल का यह युद्ध तकरीबन दो माह तक चला, जिसमें 527 वीर सैनिकों का बलिदान देश को देनी पड़ी। 1300 से ज्यादा सैनिक इस युद्ध में घायल हुए। पाकिस्तान के लगभग 1000 से 1200 सैनिकों की इस जंग में मौत हुई। अंत में भारत को इस युद्ध में जीत हासिल हुई।

हिमाचल प्रदेश की वीर भूमि में जन्मे 52 वीर सैनिकों ने भी इस युद्ध में अपनी शहादत दी। इन्हीं में से कुछ नाम ऐसे भी हैं, जिनकी वीर गाथा आज भी हर देशवासी की जुबान पर है। कैप्टन विक्रम बत्रा जब पहली जून 1999 को कारगिल युद्ध के लिए गए तो उनके कंधों पर राष्ट्रीय श्रीनगर–लेह मार्ग के बिलकुल ठीक ऊपर महत्वपूर्ण चोटी 5140 को दुश्मन फौज से मुक्त करवाने की जिम्मेदारी थी। यह दुर्गम क्षेत्र मात्र एक चोटी ही नहीं थी यह तो करोड़ों देशवासियों के सम्मान की चोटी थी जिसे विक्रम बत्रा ने अपनी व अपने साथियों की वीरता के दम पर 20 जून 1999 को करीब 3 बजकर 30 मिनट पर अपने कब्जे में ले लिया। उनका रेडियो से विजयी उद्घोष "यह दिल मांगे मोर।।।। जैसे ही देश वासियों को सुनाई दिया हर एक भारतीय की नसों में ऐसा जोश और जज्बा भर गया और हर एक की जुबान भी ष्यह दिल मांगे मोर।।।"ही कह रही थी।

कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सेना शामिल थी। हांलाकि पाकिस्तान हमेशा से इस बात से इनकार करता रहा है। लेकिन युद्ध के दौरान और बाद में ऐसे कई तथ्य सामने आए हैं जो ये साबित करने के लिए काफी थे कि पाकिस्तानी सेना ने घुसपैठियों की मदद की थी। बता दें कि नवाज शरीफ ने अमेरिका से सहायता के लिए वाशिंगटन तक की यात्रा भी की थी। लेकिन उस समय अमेरिका के तत्कालीन राष्ट्रपति बिल क्लिंटन ने पाकिस्तान की मदद करने से इनकार कर दिया था।

कारगिल युद्ध को 24 वर्ष पूरे होने वाले हैं। देश का सैनिक जब सरहद पर होता है तो मातृभूमि ही उसके लिए उसका घर परिवार आदि सबकुछ होता है, इसकी सुरक्षा के लिए वह अपने प्राणों तक का बलिदान दे देता है। विजय दिवस एक दिवस मात्र ही नहीं यह सभी देशवासियों के लिए प्रेरणा और सैनिकों की जांबाजी पर गर्व करने का भी दिवस है।

धर्म परिवर्तन के खतरनाक परिणाम

नेमिष हेमन्त

फिल्म केरल डायरी आने के बाद से देश में इसाई मिशनरी और इस्लामिक जेहादियों द्वारा अंतरराष्ट्रीय षड्यंत्र के तहत बड़े पैमाने पर कराए जा रहे धर्म परिवर्तन की भयावहता पर आम जनमानस की नजर पड़ी है। ऐसी लड़कियां खुलकर सामने आ रही है, जिनका धोखे से धर्म परिवर्तन कराया गया था। रोते हुए वह बता रही हैं कि उन्हें भी कमोबेश इसी तरह से फांसा गया था। भले ही वह आइएसआइएस में भर्ती होने सीरिया तक नहीं गईं, लेकिन यहां भी उनकी जिदंगी किसी जहन्नूम से कम नहीं है। वैसे, इसके पहले तक इश्क, मोहब्बत का नाम देकर और इसे नितांत निजी मामला मानकर समाज, पीड़ित परिवार और बेटियों को उनके भरोसे ही छोड़ देता आ रहा था, लेकिन पहली बार देश के आम लोगों ने जाना कि यह षड्यंत्र कितना गहरा और भयानक है। इसे आज नहीं समझा गया तो यह आग उनके घरों तक भी पहुंचेगी और जो मुगल नहीं कर पाए, वह भविष्य में संभव हो सकता है।

आज ही कश्मीर, केरल, असम, पश्चिम बंगाल, झारखंड, पूर्वोत्तर के राज्यों की जनसांख्यिकी में बदलाव आ चुका है। कई राज्यों में हिंदू अल्पसंख्यक हो चुके हैं। और इसका असर, सरकार के निर्णयों, समाज के व्यवहार और देश विरोधी घटनाओं से देखा जा सकता है। हालांकि, बात एक फिल्म से निकली है। यह कितने दिनों तक भारतीय जनमानस को याद रहता है। वह आगे कितना संवेदनशील होती है। यह देखने वाली बात है। जबकि बात इससे आगे कि यह जागने और पीढ़ी दर पीढ़ी जगाने का वक्त है। देश में धर्मांतरण कोई नई बात नहीं है। मुगलों के आने के साथ से तलवारों की दम पर यह खूब हुआ। आज जो पीढ़ियां हमारे आस–पास दिखती हैं। ये उसी धर्मांतरण की उपज है। इसलिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक मोहन भागवत कहते हैं "हमारा डीएनए एक है और हम सभी हिंदू हैं।"

इस तथ्य को गहराई से समझने और स्वीकार करने की जगह देश के मुस्लिम समाज का बड़ा वर्ग मध्य पूर्व देशों की ओर मुंह किए रहता है और वहां से अपनी पहचान जोड़ने की कोशिश करता है। देश का बंटवारा धर्म के आधार पर हुआ तथा दावा किया जाता है कि जो मुस्लिम यहां रह गए, उन्होंने भारत की भूमि को अपनी मातृभूमि माना है, लेकिन मुस्लिम समाज के अधिकतर व्यवहार में यह कम ही दिखता है। बल्कि, मध्य पूर्व का मोह इन्हें देश के विरुद्ध भी ले जाकर खड़ा कर देता है। आजादी के बाद भी देश में षड्यंत्रपूर्वक विभिन्न राज्यों में धर्मांतरण उसी से जुड़ा है। केरल डायरी तो एक पहलू है। वास्तविक स्थिति इससे कहीं भयावह है। वर्ष 2047 तक गजवा हिंद का सपना इसी से निकलता है। जिसमें देश को इस्लामिक राष्ट्र बनाने का लक्ष्य है।

यह सिक्के का एक पहलू है। दूसरा, मामला बडे पैमाने पर इसाई मिशनरियों द्वारा प्रलोभन, इलाज में लाभ और शिक्षा के बल पर देश के विभिन्न राज्यों में बड़े पैमाने पर कराया जा रहा धर्मांतरण है, जिसमें भोलेभाले वनवासी को इसाई बनाकर उन्हें देश के विरुद्ध खड़ा किया जा रहा है। जबकि पंजाब में इसका भयावह रूप देखने को मिल रहा है। जहां वे निहंग भी बेबस दिखाई दे रहे हैं। जिन्होंने किसान आंदोलन में मोर्चा संभाला था। इसलिए इस देशविरोधी षड्यंत्र पर समय रहते सचेत होने की आवश्यकता है। सुप्रीम कोर्ट ने जबरन धर्मांतरण को देश की सुरक्षा के लिए बड़ा खतरा बताया है। इसलिए अब राज्यों से आगे निकलकर केंद्र को इसे लेकर सख्त कानून बनाने की आवश्यकता है। साथ ही समाज को सतर्क रहने की भी, ताकि फिर आगे कोई धर्मांतरण न हा।

मीम-भीम गठजोड़ के छद्म नारे के पीछे छिपी साजिश को समझें

आदित्य भारद्वाज

भारत 'लड़ कर लिया पाकिस्तान, हंसकर लेंगे हिंदुस्तान' इस नारे को आप भी सुनते होंगे। कभी सोचा है की आखिर इस नारे का मतलब क्या है? दरअसल यह भारत के भूत यानी बटवारा और भविष्य दोनों से जुड़ा हुआ है। आज आजादी के 75 वर्ष बाद शायद हम उन परिस्थितियों को भूल गए है जिसके कारण देश का बटवारा हुआ। अगर हम इतिहास के कुछ पन्नों को पलटें तो इस नारे का अर्थ और उसके पीछे की खतरनाक साजिश दोनों स्पष्ट हो जाती है। 1947 में स्वतंत्रता के कुछ वर्ष पहले देश में गृहयुद्ध जैसे हालात पैदा हो गए थे। मुस्लिम लीग ने मुसलमानों के लिए अलग देश पाकिस्तान की मांग मानने के लिए कांग्रेस को मजबूर करने के लिए 16 अगस्त 1946 को डायरेक्ट एक्शन डे की घोषणा की। पूरे देश में भयंकर दंगे हुए, हजारों लोग मारे गए और अंततः वह देश का विभाजन करने में सफल हुए। लड़कर के उन्होंने मुसलमानों के लिए अलग देश पाकिस्तान ले ही लिया।

मजहब के आधार पर देश का बटवारा हो गया और मुसलमानों ने अपने लिए अलग देश पाकिस्तान ले लिया लेकिन जो मुसलमान पाकिस्तान के लिए लड़ रहे थे उनमे से बड़ी संख्या में मुस्लिम देश पाकिस्तान जाने के बजाय हिंदुस्तान में ही रुक गए। पाकिस्तान तो उन्होंने ले लिया अब उनकी नजर हिंदुस्तान पर है। चुकीं हिंदुस्तान को लड़कर लेना संभव नहीं है तो हिंदुस्तान को अपने कब्जे में लेने के लिए नया हथियार है मीम–भीम का छद्म नारा। दरअसल भीम नाम उस समाज को परिभाषित करता है जिस समाज ने चार्तुवर्ण व्यवस्था के कारण वर्षों तक शोषण सहन किया। बाबा साहेब आंबेडकर जी ने इसके खिलाफ आवाज उठाई और समाज के इस वर्ग के सशक्तिकरण के लिए प्रयास किए। बाबा साहेब के विचार भारतीय दर्शन को ही परिलक्षित करते हैं, उनका सिर्फ एक ही हेतु है समतायुक्त समाज का निर्माण किया जाए। भीम नाम समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों की बात करता हैं जिसका एक पक्ष राजनीतिक भी हैं पर राजनीतिक पक्ष ही सबकुछ है ऐसा नहीं है। भीम समाज वह है जिसके आदर्श कबीर, फुले, साहू, हेडगेवार और बाबा साहेब आंबेडकर हैं।

वहीं मीम शब्द अपने अर्थ में किसी एक पूजा पद्धति को मनाने वाले वर्ग की पहचान हैं। मुस्लिम समुदाय को परिभाषित करने के लिए इसका प्रयोग शुरू किया गया है। जहां भीम शब्द का अर्थ वंचित जातियों के सभी लोगों को एकजुट कर भारत में समरस समाज की स्थापना करना है। दरअसल इस छद्म नारे के पीछे यह सोच है की हिन्दू समाज का अनुसूचित वर्ग जो की लगभग 25 प्रतिशत है यदि उसे हिन्दू समाज से अलग कर दिया जाए और यदि वह लगभग 20 प्रतिशत मुस्लिम आबादी के साथ मिल जाए तो चुनाव जीत कर मुस्लिम प्रधानमंत्री बनाया जा सकता है। एकबार मुस्लिम प्रधानमंत्री बन गया, सत्ता अपने हाथ में आ गयी तो फिर मुस्लिम सत्ता स्थापित कर भारत पर कब्ज़ा किया जा सकता है। एक बार मुस्लिम सत्ता स्थापित हो गई तो उसमे किसी गैर मुस्लिम चाहे वह अनुसूचित समाज से हो या कोई और हो किसी के लिए कोई स्थान नहीं। एक बार मुस्लिम मेजोरिटी होने के बाद हिन्दुओं की क्या दुर्गति इसका प्रत्यक्ष उदाहरण पाकिस्तान है जहाँ छोटी–छोटी हिन्दू लड़कियों का अपहरण कर उनका धर्म परिवर्तन कर अधेड़ उम्र के मुसलमानों के साथ निकाह करा दिया जा रहा है। मीम दृ भीम नारे का एक मात्र उद्देश्य मुस्लिम प्रधानमंत्री बनाना है। यह नारा कितना छद्म है इसका उदाहरण है योगेन्द्र नाथ मंडल जो विभाजन के बाद पाकिस्तान चले गए वहां कानून मंत्री भी बने लेकिन दो साल के अन्दर ही उन्हें मीम–भीम नारे की वास्तविकता समझ आ गयी और अपनी मान मर्यादा बचाने के लिए उन्हें वापस भारत आना पड़ा।

संस्कार का केंद्र है परिवार

सीमा ओझा

परिवार हमारे जीवन का आधार है। हमारी जड़ है। हमारी पहचान है। यही नहीं यह व्यवस्था हमारे संस्कारों का केंद्र भी है। यहीं से इसी धुरी से हम नैतिकता, शील, धैर्य, क्षमा आदि गुणो से जीवन का निर्माण करते है। यही हमारा जीवन मूल्य एवं चरित्र निर्माण करता है।

परिवार व्यवस्था एवं संस्कारों पर छोटा सा प्रसंग – अयोध्या से वनगमन के बाद चित्रकूट में श्रीराम और भरत मिले। भरत श्रीराम से बार –बार निवेदन करते हैं कि वह अयोध्या चलकर राजपाठ संभाले।पर श्रीराम राजपाठ संभालने से मना कर देते है और भरत से कहते हैं कि तुम मुनि माता मंत्रियों की शिक्षा मानकर पृथ्वी प्रजा एवं अयोध्या का पालन करना। जब श्रीराम अपने निर्णय पर दृढ़ रहे तो भरत ने चौदह वर्षों तक राम की चरण पादुका रखकर राज किया। भरत ने स्वयं को पीछे रखकर ऐसी व्यवस्था का निर्माण किया जिसमें उसकी नैतिकताका उदारहण लेकर हर प्रजाजन ने रामराज्य के दायित्व का पालन किया।

परिवार के संस्कार के केंद्र में नारी शक्ति का संपूर्ण योगदान है। सत्यनाराण व्रत कथा में साधु वैश्य दामाद के साथ व्यापार करने जाता है। विदेश में दोनों को जेल में डाल दिया जाता है। गांव में मां बेटी रह जाती हैं। पतियों के जेल में जाने से इन दोनों अकेली महिलाओं का संघर्ष बढ़ जाता है। एक दिन पुत्री एक कथा में पहुंच जाती है। कथा सुनकर वह भी व्रत–जप करने लगती है। उसके पिता एवं पति जेल से छूट जाते है। भारत में स्त्री शक्ति परिवार की खुशी, परिवार की शांति के लिए सदैव अपने दायित्व का निर्वाह करती हैं।

आज एकल परिवार में बच्चे

संस्कारों से दूर होते जा रहे हैं। पहले त्योहार, पर्व पर ऐसी व्यवस्था थी कि पूरा परिवार एकत्र होकर धार्मिक अनुष्ठान, कर्मकांड से संस्कार सीखता था। परिवार में सब मिलजुल कर रहें यहीं से निर्मित होता है एक सौहार्द। संस्कार हीनता दूर करने का एकमात्र सरल व्यवहार शास्त्रों का अध्ययन, गोसेवा, और प्रकृति की पूजा है। व्यक्ति परिवार संस्था का अंग इसलिए बनता है कि वह समाज संसार की अशांति से दूर यहां शांति पा सकें। हर रिश्ते के अपने अलग बीज है, सबकी प्रकृति भी अलग है पर यदि संस्कार से परिवार में समन्वय रहे तो गेहूं की बाली में भी मिठास आ सकती है।

बढ़ती आधुनिकता ने भारतीय परिवारों की जीवनचर्या में बहुत बदलाव ला दिया है। परिवार के सदस्य घर के सदस्यों के अलावा बाहर अधिक भरोसा करने लगे हैं। इस पर चिंतन करें कि बच्चा या घर का सदस्य बाहरी दुनिया से क्यों प्रभावित है। सबसे पहले प्रेम से भरकर घर में पूजा प्रारंभ करें जब सभी सदस्य एक साथ घर में पूजा करेंगे तो एक दूसरे के प्रति आदर के साथ सहयोग की भावना से भी भर जाएंगे। विश्व में भारत परिवार व्यवस्था के लिए जाना जाता है, उसमें पीढ़ी–दर पीढ़ी दिये जाने वाले संस्कारों के लिए। अब एकल परिवार में संस्कार समाप्त होते जा रहे है।परिवार टूटने लगे है। हम सभी का यह संकल्प होना चाहिए कि परिवार संस्था बची रहे। परिवार बचाना भी एक बड़ी राष्ट्र सेवा है। हमारे धर्म ग्रंथों ने अपने बुजुर्गों को देवतुल्य माना है। उन्हें ईश्वर का स्वरुप माना है। अगर अपने पुरखों के प्रति सेवा व सम्मान भाव आगे की पीढ़ी में गया तो घर में दिव्यता व शांति रहेगी। यही नहीं हमारी मर्यादा भी अक्षुण्ण रहेगी। परिवार में संस्कार के दृढ़ होते ही समस्याओं का समाधान मिलेगा। परिवार की एक ईश्वर कृपा है। जब यह भाव जीवन परिवार में उतरेगा परिवार शांत सुखी रहेंगे। परिवार टूटते हैं तो सामाजिक एकता बिखरती है और कहीं न कहीं राष्ट्र की अंखड़ता पर भी इसका असर होता है।

जल स्रोत एवं वर्षा जल संचय का अनूठा प्रयोग

रामवीर श्रेष्ठ

पानी हमारे पर्यावरण का अहम हिस्सा है। विज्ञान का ज्ञान मानता है कि जीवन की उत्पत्ति जल से हुई थी, उत्पत्ति से आप असहमत हो सकते हैं लेकिन कोई भी इस बात से असहमत नहीं हो सकता कि जल ही जीवन का आधार है। किसी पेड़ को लगाते वक्त आप पानी न दें तो उसके जीवन की डोर सूख जाती है। विज्ञान ये भी मानता है कि जितने प्रतिशत पानी इस धरती पर है उतना ही पानी हमारे शरीर में भी है। थोड़ी धूप यानि लू लग जाये तो शरीर का पानी सूखने में समय नहीं लगता, और कई बार ये प्राणघातक भी हो जाता है। इतनी सारी बातें में मैंने आपके साथ पानी के महत्व को जाहिर करने के लिए की हैं। हालांकि ऐसा नहीं है कि पानी के महत्व के बारे में आप नहीं जानते हैं। और ऐसा भी नहीं कि हम पानी की समस्या के कारणों को नहीं जानते हैं। हमारी कोशिश उन बातों को सामने लाने की जिनके वजह से स्थिति सुधर रही है। आज हम वर्षा जल संचय एक ऐसे प्रयोग की बात करते है जो हमने आंखों से देखा।

पंजाब के फरवाही गांव में हमें एक पढ़ा लिखा नौजवान मिला, जिसने एक साथ कई समस्याओं को ठीक किया। दरअसल फरवाही के रवदीप ने सबसे पहले पराली के 2–2 फुट उंचे बंडलों को अपने 2 एकड़ खेत में सटाकर बिछा दिया। इस खेत में करीब 40 तरह के फलदार पेड़ लगे हुए थे। इसका पहला लाभ ये हुआ कि अब खेत में निराई गुड़ाई की ज़रूरत हमेशा के लिए समाप्त हो गई। दूसरा अब इस खेत में खरपतवारों के उगने के रास्ते हमेशा के लिए बंद हो गए। तीसरा इसने जबरदस्त मल्चिंग का काम किया, जिससे ज़मीन पर सीधा प्रकाश पड़ना अब बंद हो गया। चौथा केंचुए समेत लाखों सूक्ष्म जीवाणुओं को पनपने का मौका मिल गया। पांचवा खेत में स्थायी नमी रहने लगी, जिसकी किसी पेड़ को सबसे ज्यादा ज़रूरत होती है। और छठा वह जिसके लिए मैने आपको इतने सारे लाभ गिनाए, वह था कि अब उन्हें खेत को पानी देने की जरूरत लगभग समाप्त हो गई। मतलब तीसरे दिन पानी मांगने के लिए खड़े खेत अब आनंद में थे। अब रवदीप अपने खेत को साल में मात्र दो बार सिंचाई करते हैं। रवदीप ने हमें बताया कि अगले साल से उनके खेत कभी पानी नहीं मानेंगे, साथ ही बम्पर पैदावार भी देंगे। अब वह सिर्फ बारिश के पानी पर निर्भर हैं। इसी खेत में वह हल्दी, आलू और बेल वर्गीय फसलों का उत्पादन भी ले रहे हैं। 1 एकड़ से करीब 2 लाखतो वह सिर्फ हल्दी से कमा लेते हैं।

है ना कमाल की कहानी। अब मैं आपको इस कहानी की साइंस समझाता हूं। दरअसल जंगलों के विकास की कहानी ऐसी ही है। पेड़ जब लगातार अपने पत्ते छोड़ते है, तो नीचे इतना बायोमास इक्ट्ठा हो जाता है कि तेज गर्मी में भी ज़मीन की नमी बनी रहती है। और फिर जैसे ही बरसात का मौसम आता है तो वो साल भर की नमी फिर से इकट्ठा कर लेते हैं। इस तरह कृत्रिम सिंचाई की ज़रूरत समाप्त हो जाती है। आज जरुरत है रवदीप जैसे युवाओं से प्रेरणा लेकर नए–नए प्रयोग कर प्राकृतिक जल स्रोतों, झील, तालाब इत्यादि को पुनर्जीवित करने एवं वर्षा जल के अधिकतम संचय की व्यवस्था करने की।

स्वदेशी यानी स्व का बोध

उमेश चतुर्वेदी

जिन चीजों का हम उत्पादन नहीं कर सकते, उनके उत्पादन के लिए हमें तैयारी करती रहनी चाहिए। मौजूदा केंद्र सरकार की मेक इन इंडिया और मेड इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा इसी स्व का विस्तार है। जिसमें अपना सम्मान भी है, अपने उपयोग पर भी जोर है और दोनों के बीच संतुलन भी है।

आज के दौर में स्वदेशी की जब भी चर्चा होती है, तो एक ही बोध है..अपनी माटी, अपनी माटी की उपज, अपनी संस्कृति और अपनी परंपराएं....इसके साथ ही स्वदेशी का एक और बोध होता है, अपने देश में बनी हुई चीजें...और उनका ही इस्तेमाल..स्वदेशी को लेकर स्थापित इस बोध या सोच की बुनियाद करीब एक सौ बीस साल पुरानी है। 1905 में जब अंग्रेजों ने सांप्रदायिक और धार्मिक आधार पर बंगाल का विभाजन किया, जिसे इतिहास में बंग – भंग के नाम से जाना जाता है, तब समूचे भारत में बंग–भंग के खिलाफ आंदोलन उठ खड़ा हुआ था। उस आंदोलन में विदेशों में बनी चीजों का बहिष्कार करना प्रमुख था। इसकी एक बड़ी वजह यह थी कि तब तक अंग्रेजों ने पारंपरिक भारतीय दस्तकारी और खेती–किसानी आधारित अर्थव्यवस्था को तहस– नहस करके एक तरह से आर्थिक तौर पर भी अपना गुलाम बना लिया था। अंग्रेजों की नजर में तब तक भारतीयों को दो कार्यों के लिए इस्तेमाल करते थे। पहला भारत से वे अपनी मिलों और अपने उद्योगों के लिए कच्चा माल ले जाते थे और ब्रिटेन में बनी चीजों को भारत के विशाल बाजार में खपाते थे। इसका असर यह हुआ कि भारत में बेरोजगारी फैल चुकी थी। स्वदेशी आंदोलन भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के सफलतम आंदोलनों के रूप में स्थापित हो गया। इस आंदोलन ने देश को जहां एक किया, वहीं अपनी उपज, अपनी पैदावार, अपनी दस्तकारी के प्रति लोगों को नए सिरे से सम्मोहित किया। उसी स्वदेशी आंदोलन की उपज खादी भी है। खादी तब से स्वदेशी का प्रतीक बनी हुई है।

पिछली सदी के नौंवे दशक में शुरू हुए उदारीकरण और बहुराष्ट्रीयकरण ने भारत को स्वदेशी की तरफ नए सिरे से सोचने को प्रेरित किया। बहुराष्ट्रीयकरण और औद्योगिकरण के साथ ही विदेशी वस्तुओं से भारतीय बाजार के पट जाने के बाद भारत अपनी आजादी खोने का खतरा पैदा हो सकता है। भारत को दो सौ बरसों तक गुलाम रखने वाले अंग्रेज देश में पहले व्यापारी बनकर ही आए। ईस्ट इंडिया कंपनी ने पहले भारत में कारोबार ही बढ़ाया और देखते ही देखते वह भारत के कारोबार के जरिए आर्थिकी पर कब्जा करने में सफल रही और फिर भारत की शासन व्यवस्था पर भी कब्जा कर लिया। नब्बे की उस दौर में एक बार फिर स्व की ओर आकर्षण भी बढ़ा।

भारत में सदियों से वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा रही है, लेकिन इस सोच में भारत का भाव किसी को गुलाम बनाने का भाव नहीं रहा है। जब हम किसी को परिवार मानते हैं तो उसमें किसी को गुलाम या अधीन बनाने का भाव नहीं होता। उदारीकरण और उसके जरिए आई संचार क्रांति की वजह से दुनिया के बारे में एक नई सोच विकसित हुई है। उसके मुताबिक, दुनिया को वैश्विक गांव यानी ग्लोबल विलेज की तरह माना जाने लगा है। लेकिन वैश्विक गांव की इस अवधारणा में समूचे गांव को बाजार और उपभोक्ता के रूप में देखा जाता है। इसलिए वैश्विक गांव और वसुधैव कुटुंबकम् की अवधारणा में बुनियादी अंतर साफ नजर आता है।

आज की वैश्विक स्थिति जैसी है, उसमें वैश्वीकरण के रूक पाने की गुंजाइश नहीं है। आज देशों की राजनीतिक सीमाएं भले ही मजबूत हुई हैं, लेकिन बाजार के नजरिए से पूरी दुनिया उपभोक्ता और उत्पादक के खेमे में बंटी नजर आ रही है। मौजूदा वैश्विक व्यवस्था में राजनीतिक सीमाओं का अतिक्रमण भले ही आसान नहीं हो,लेकिन यह भी सच है कि बाजार और उपभोक्ता के नजरिए से अतिक्रमण की भरपूर गुंजाइश है। इसलिए पूरी दुनिया का सामान पूरी दुनिया में उपलब्ध है।

स्वदेशी का मतलब है, स्व यानी अपनत्व का भाव...स्व यानी अपनी परंपरा, अपनी संस्कृति और अपनी देसी सोच को बचाए रखना। हमें अब ध्यान देना होगा कि उन्हीं विदेशी उत्पादों को हम अपनाएं, जिन्हें अपना देश उत्पादित नहीं करता लेकिन उसकी हमें जरूरत है। हमें यह भी ध्यान रखना होगा कि जिन चीजों का हम उत्पादन नहीं कर सकते, उनके उत्पादन के लिए हमें तैयारी करती रहनी चाहिए। मौजूदा केंद्र सरकार की मेक इन इंडिया और मेड इन इंडिया और आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा इसी स्व का विस्तार है। जिसमें अपना सम्मान भी है, अपने उपयोग पर भी जोर है और दोनों के बीच संतुलन भी है।

संघ ने भगवा ध्वज को ही अपना गुरु क्यों माना?

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने भगवा ध्वज को अपना गुरू माना है तथा गुरू पूर्णिमा के अवसर पर देश भर में गुरू दक्षिणाओं के कार्यक्रम होते हैं। प्रश्न यह है कि संघ ने भगवा ध्वज को ही अपना गुरू क्यों माना है? राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक किसी व्यक्ति या ग्रंथ की जगह भगवा ध्वज को अपना मार्गदर्शक और गुरु मानते हैं। जब डॉ। हेडगेवार ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का स्थापना किया, तब अनेक स्वयंसेवक चाहते थे कि संस्थापक के नाते वे ही इस संगठन के गुरु बनें; क्योंकि उन सबके लिए डॉ। हेडगेवार का व्यक्तित्व अत्यंत आदरणीय और प्रेरणादायी था। इस आग्रहपूर्ण दबाव के बावजूद डॉ। हेडगेवार ने हिंदू संस्कृति, ज्ञान, त्याग और संन्यास के प्रतीक भगवा ध्वज (केसरिया झंडा) को गुरु के रूप में प्रतिष्ठित करने का निर्णय किया। हिंदू पंचांग के अनुसार हर वर्ष व्यास पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा) के दिन संघ–स्थान पर एकत्र होकर सभी स्वयंसेवक भगवा ध्वज का विधिवत् पूजन करते हैं।

स्थापना के तीन साल बाद संघ ने सन् 1928 में पहली बार गुरुपूजा का आयोजन किया था। तब से यह परंपरा अबाध रूप से जारी है और भगवा ध्वज का स्थान संघ में सर्वोच्च बना हुआ है। ध्वज की प्रतिष्ठा सरसंघचालक (संघ प्रमुख) से भी ऊपर है।

भगवा ध्वज को ही गुरू क्यों?

भगवा रंग समृद्धि और आनंद का प्रतीक माना जाता है, यह रंग न केवल आँखों को एक अपूर्व राहत व शांति देता है बल्कि मानसिक रूप से संतुलन बनाने के साथ यह क्रोध पर नियंत्रण करते हुए प्रसन्नता को बढ़ाता है।

भगवा रंग वृहस्पति गृह का रंग है। यह ज्ञान को बढाने और आध्यात्मिकता का प्रसार करता है। भगवा पवित्र रंग है और युगों से हमारे धार्मिक आयोजनों में और साधु–संतों के पहनावे में प्रयोग होता रहा है। हमारे पूर्वज भगवा ध्वज के सम्मुख नतमस्तक होते रहे हैं। सूर्य में विधमान आग और वैदिक यज्ञ की समिधा से निकलने वाली आग भी भगवा रंग की है। भारतवर्ष में विदेशी आक्रांताओं और आक्रमणकारियो के खिलाफ युद्ध भी भगवा ध्वज के तले ही लड़े गए।

भगवा रंग प्रकृति से भी जुड़ा हुआ है, सूर्यास्त और सूर्योदय के समय ऐसा प्रतीत होता है मानो प्रकृति का पुनर्जन्म हो रहा हो। सूर्य की यह लालिमा नकारात्मक तत्वों साफ़ करती है।

प्राचीन इतिहास

लंका पर आक्रमण करते समय भगवान राम ने रघुवंश की ध्वजा के नीचे रावण से युद्ध किया था। रघुवंश के ध्वज पर तीन त्रिज्याएँ अंकित थी जो अग्नि की ज्वालायें जैसी दिखती थी। इस पर उनके कुलदेवता सूर्य की छवि अंकित थी तथा उसकी पृष्ठभूमि लाल थी।

महाभारत काल में अर्जुन युद्धभूमि के लिए जाने से पहले अपने रथ 'नांदीघोष' की परिक्रमा करते, उसके बाद कवच पहनने के बाद अपनी कपि–ध्वजा फहराते थे। अर्जुन की ध्वजा पर भगवान हनुमान की छवि अंकित थी।

मुगलों के खिलाफ भगवा ध्वज

- महाराणा प्रताप ने हल्दी घाटी के युद्ध में इसी ध्वज का इस्तेमाल किया था।
- 17वीं शताब्दी में बीकानेर रियासत की ध्वजा भगवा और लाल रंग की थी, जिस पर चील पक्षी की आकृति अंकित थी। यह पक्षी देवी दुर्गा का प्रतिनिधित्व करता था
- जोधपुर रियासत की ध्वजा को पंचरंग कहा जाता था, जिसमें भगवा, गुलाबी, सफ़ेद, लाल, पिला और हरा रंग थे।
- नागपुर के भोसलें शासक भगवा ध्वज का प्रयोग करते थे।
- छत्रपति शिवाजी महाराज भगवा ध्वज का इस्तेमाल करते थे।
- झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई ने ने युद्ध में इसी भगवा ध्वज का इस्तेमाल किया था।

महिलाओ को आर्थिक रूप से सक्षम बनाना जरूरी

ममता चतुर्वेदी

बदलते परिवेश और बढ़ती हुई महंगाई में बेहतर जीवन जीने के लिए यह जरूरी है कि घर का हर वह सदस्य आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर हो, जो शारीरिक रूप से सक्षम है । दरअसल जब आप फाइनेंशली इंडिपेंडेंट होते हैं तो आपके लिए एक बेहतर जीवन चुनने में आसानी होती है महिलाओं के लिए यह भी बेहद जरुरी है। दरअसल भारत में कई ऐसी महिलाएं हैं जो कुशल ग्रहणी है, और मां तो है ही, लेकिन इन सब के बदले उन्हें अपने करियर से हाथ धोना पड़ा ...कई महिलाएं तो पढ़ी लिखी है लेकिन मेटरनिटी लीव के बाद कभी ऑफिस ज्वाइन नहीं कर पाई और इस वजह से उनका बना हुआ करियर खत्म हो गया...

देश बदल रहा है महिलाओं की दशा में भी सुधार आ रहा है । समय के साथ–साथ नारी शक्ति और सशक्त होती जा रही है। परिवर्तन प्रकृति का नियम है यह बात तो सत्य है किंतु परिवर्तन का क्या परिणाम हुआ है और क्या होगा उस परिवर्तन को आने वाली पीढ़ी को किस तरह स्वीकार करना है इससे क्या सीख लेती है यह बात अधिक महत्वपूर्ण है। देखा जाए तो हर युग में प्रतिभाशाली महिलाएं रही है । हर युग में उन्होंने अपनी प्रतिभा से समाज में उदाहरण पेश किया है.... जैसे सीता, सावित्री, दौपदी, गार्गी जैसे पौराणिक देवियों से लेकर रानी दुर्गावती, रानी लक्ष्मीबाई, अहिल्याबाई होल्कर, रानी चेन्नम्मा आधुनिक भारत की महिलाओं ने भी देश को विश्व में गौरवान्वित किया है और यही वजह है कि अगर आज हमारे देश की महिलाएं पढ़ी लिखी और आर्थिक तौर पर सक्षम होंगी तो अपने घर के सदस्यों को बेहतर बना पाएंगे। ऐसे में वर्तमान समय में ये बेहद आवश्यक की देश की आधी आबादी सक्षम और आर्थिक तौर पर निर्भर हो।

तो आइए चलते जानते हैं कि एक महिला के लिए आत्मनिर्भर होना क्यों जरूरी है और उसके फायदे क्या है?

- ✓ जब एक महिला आर्थिक तौर पर आत्म निर्भर होती है तो वह बेहतर तरीके से अपने परिवार को हर तरह से सहयोग कर पाती है। महंगाई के इस युग में केवल एक इंसान के सैलरी से घर चलाना आसान नहीं होता है । ऐसे में महिला की आमदनी घर खर्च को काफी आसान बना देती है।
- ✓ जब महिलाएं खुद कमाई करती है तो उन्हे हर छोटे–बड़े खर्चे के लिए पति से परमिशन मांगने की जरूरत नहीं पड़ती, वह खुद पर खर्च कर सकती हैं।
- ✓ जो महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती हैं उन्हें घर परिवार में अधिक सम्मान मिलता है। हालांकि यह सच है कि एक ग्रहणी का कार्य अधिक कठिन होता है लेकिन फिर भी हमारे समाज में उनके काम को अहमियत नहीं दी जाती , लेकिन अगर आप आत्मनिर्भर हैं परिवार के साथ रिश्तेदार पड़ोसी भी आपको सम्मान की दृष्टि से देखते हैं।
- ✓ हमारे देश, हमारे समाज का एक वर्ग आज भी ऐसा है जो घरेलू हिंसा का शिकार है और वह आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं होने की वजह से अन्याय के खिलाफ अपनी आवाज बुलंद नहीं कर पाती, लेकिन अगर आप आर्थिक तौर पर आत्मनिर्भर हैं, सक्षम है तो आपको अन्याय सहने की आवश्यकता नहीं।
- ✓ देश की आधी आबादी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होती है तो उनमें अधिक आत्मविश्वास होता है उन्हें जीवन में आगे बढ़ने के लिए हर क्षेत्र में प्रोत्साहित करता है ।
- ✓ यही नहीं वह अपने परिवार और बच्चे के भविष्य के लिए बेहतर विकल्प ढूंढने और निर्णय लेने में भी सक्षम होती हैं।और महिला सशक्तिकरण तभी संभव है जब आत्मनिर्भरता और आर्थिक आत्मनिर्भरता भी हो ,महिलाओं को जरूरत है अपने अस्तित्व को पहचानने की और इसको बनाए रखने की ओर कदम बढ़ाने की।
- ✓

त्याग, तपस्या और बलिदान का प्रतीक गुरुद्वारा शीशगंज साहिब

डॉ. संजय वर्मा

गुरुद्वारा शीशगंज साहिब आतंक, धार्मिक उन्माद एवं क्रूरता की पराजय और धर्म की रक्षा हेतु सर्वोच्च बलिदान के विजय का प्रतीक है। दिल्ली में स्थित नौ ऐतिहासिक गुरुद्वारों में से एक शीशगंज साहिब का निर्माण सन 1783 में बघेल सिंह द्वारा नौवें सिख गुरु, गुरु तेगबहादुर जी द्वारा धर्म की रक्षा हेतु दिए गए बलिदान की याद में किया गया था। यह दिल्ली के चांदनी चौक में स्थित है।

क्रूर मुगल शासक औरंगजेब द्वारा आतंक और तलवार की नोक पर हिंदुओं का जबरन धर्म परिवर्तन कराया जा रहा था। उसने सभी कश्मीरी पंडितों को जबरन इस्लाम कबूल कराने का आदेश दिया। तब कश्मीरी पंडितों ने गुरु तेगबहादुरजी से धर्म की रक्षा हेतु प्रार्थना की। उन दिनों गुरुजी अपने परिवार के साथ आनंदपुर साहिब (पंजाब) में रहते थे। उनके पुत्र गुरु गोबिंद सिंह (दसवें सिख गुरु), जिनकी उम्र उस समय 10 वर्ष थी, उन्होंने अपने पिता से कहा कि इस समय की परिस्थिति किसी महान शख्स की शहादत मांग रही है और आपके अलावा यहां कोई नहीं है जो यह बलिदान दे सके। पुत्र की समझ और सुझाव पर गुरु जी अत्यंत प्रसन्न हुए और अपने पांच साथियों के साथ दिल्ली के लिए निकल पड़े।

गुरु तेगबहादुर जी अपने साथी भाई मतीदास, भाई दयाल दास, भाई सतीदास, भाई गुरुदित्ता के साथ आनन्दपुर साहिब से दिल्ली की ओर आ रहे थे तब औरंगजेब के आदेश पर गुरु जी को आगरा में गिरफ्तार कर दिल्ली लाया गया। औरंगजेब ने गुरु जी को इस्लाम कबूल करने के लिए कहा किंतु गुरु जी ने यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया किया कि ईश्वर ने सभी धर्मों के अनुयायियों को अपने इच्छानुसार जीवन जीने का अधिकार दिया है। औरंगजेब ने गुरु जी को कई प्रकार के प्रलोभन और मान–सम्मान देने की बात की किंतु गुरु जी नही माने। तब उसने गुरु तेगबहादुरजी को लोहे के पिंजरे में कैद कर दिया और तत्पश्चात उनका सिर कलम करने का आदेश दिया। इस बीच दिल्ली के बहुत से काज़ी और मौलीवियों ने गुरु जी को मनाने की कोशिश की और इस्लाम कबूल कर अपनी जान बचाने की सलाह दी किंतु गुरु जी अपनी बात पर अडिग रहे। गुरु तेगबहादुरजी को 11 नवंबर 1675 को वर्तमान शीशगंज साहिब गुरुद्वारा की जगह पर स्थित

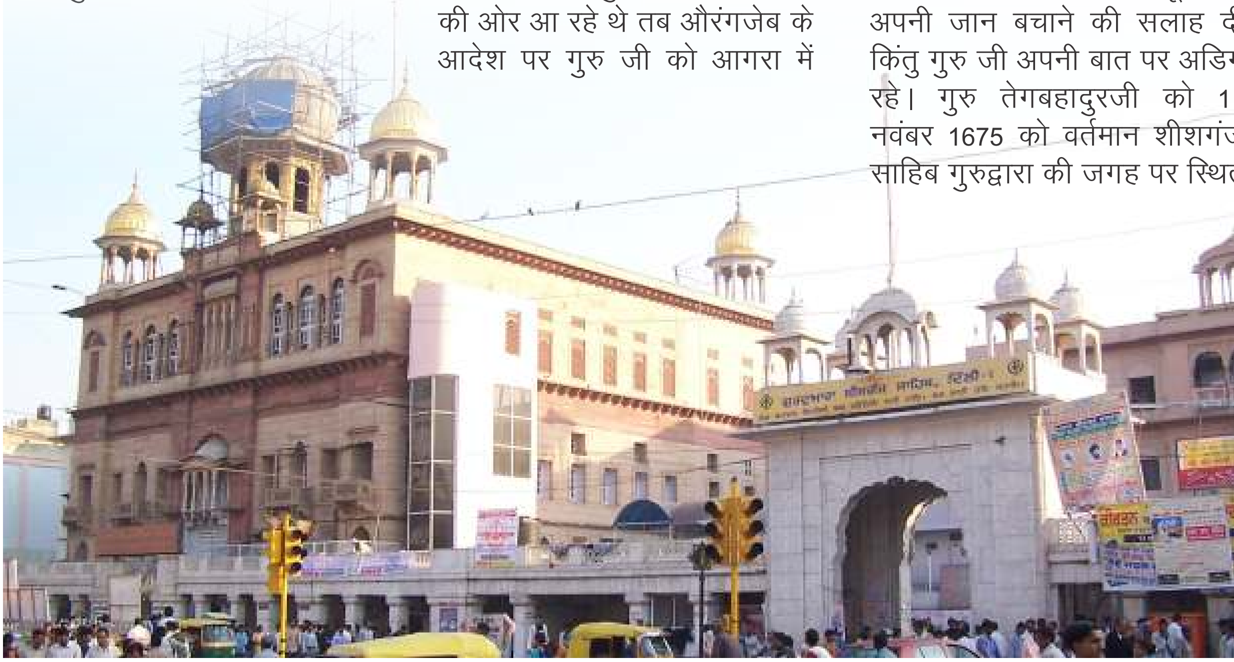

एक बरगद के पेड़ से बांध दिया गया और जल्लाद जलालुद्दीन ने तलवार से गुरु जी का सिर कलम कर मौत की सजा का फरमान पूरा किया। इसके साथ ही उनके सभी साथियों की निर्मम हत्या कर दी गई।

गुरू तेगबहादुरजी की शहादत के बाद उनके चेले लखी शाह बंजारा ने गुरु जी के शरीर को दिल्ली स्थित अपने घर समेत जला दिया और बाद में उस स्थान पर रकाबगंज गुरुद्वारा का निर्माण किया गया। उनके एक अन्य चेले जैता ने गुरु जी के कटे सिर को आनंदपुर साहिब लाकर गुरु गोबिन्द सिंह को सौप दिया जिन्होंने उनका अंतिम संस्कार किया। इस प्रकार शीशगंज साहिब गुरुद्वारा का इतिहास रकाबगंज गुरुद्वारा और आनंदपुर साहिब गुरुद्वारा से जुड़ा हुआ है।

1783 में सिख मिलिट्री के लीडर बघेल सिंह द्वारा बनवाये गए शीश गंज गुरुद्वारा को 1930 में पुर्नव्यवस्थित किया गया। गुरु तेगबहादुरजी के त्याग, तपस्या और बलिदान का जीवंत प्रतीक यह गुरुद्वारा सभी संप्रदाय के अनुयायियों और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है।

महामृत्युंजय मंत्र

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृ त्योर्मुक्षीय मामृतात्

महामृत्युंजय मंत्र का अर्थ :

ऊँ	–	हे ओंकार स्वरूप परमेश्वर शंकर
त्र्यम्बकं	–	तीन आँखो से शोभायमान आपका
यजामहे	–	हम पूजन करते है, कृपया हमारे जीवन में
सुगन्धिम्	–	भक्ति का सुगंध दीजिए,
पुष्टिवर्धनम्	–	आनंद की वृद्धि कीजिए।
उर्वारुकमिव	–	जिस प्रकार फल आसानी से
बन्धनान्	–	पेड़ के बंधन से मुक्त होते है, ठिक वैसे ही
मृत्योर्मुक्षीय	–	हमें मृत्यु के बंधन से मुक्त करके
मामृतात्	–	अमृत पद की प्राप्ति दीजिए।

महामृत्युंजय मंत्र का सरल अर्थ

इस पूरे संसार के पालनहार, तीन नेत्र वाले भगवान शिव की हम पूजा करते हैं। इस पूरे विश्व में सुरभि फैलाने वाले भगवान शंकर हमें मृत्यु के बंधनों से मुक्ति प्रदान करें, जिससे कि मोक्ष की प्राप्ति हो जाए।

इन्द्रप्रस्थ विश्व संवाद केन्द्र
के डिजिटल प्लेटफार्म से जुड़ें एवं
सोशल मीडिया पर Follow करें

@IVSKdelhi.in
@IVSKdelhi
@IVSKdelhi
@IVSKdelhi
@IVSKdelhi
@IVSKDelhi

मराठों की दिल्ली

प्रतिबिंब शर्मा

1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद यशोबाई को लालकिले में भेज दिया गया था। पहली बार पेशवा बाजीराव के पिता बालाजी विश्वनाथ भट्ट ने 1719 में शिवाजी की पुत्रवधु यशोबाई को लाल किले से छुड़ाने के लिए दिल्ली पर हमला किया था और सफल हुए थे।

इतिहास लिखा जाए या ना लिखा जाए, इतिहास, इतिहास ही होता है। हमें अभी तक स्कूल—कॉलेज में पढ़ाया गया इतिहास तो वैसे भी ब्रिटिश हुकमरानों और उनके जाने के बाद उन्हीं के पदचिन्हों पर चलने वाले देश के सत्तासीनों के कहने, पद और पैसे की लालसा में लिखा गया है। यही कारण है कि आततायी मुगलों को तो महिमामंडित किया गया लेकिन उनकी नाक में दम करने वाले मराठाओं के शौर्य को इतिहास में जगह नहीं दी गई जबकि सत्य यह है कि मराठों ने दिल्ली पर आठ आक्रमण किए। यहां तक कि पानीपत की पराजय का प्रतिशोध लेने के लिए भी मराठों ने दिल्ली पर हमला किया और जीत हासिल की। मराठाओं ने यह हमले केवल दिल्ली जीतने के लिए नहीं किये बल्कि सनातन धर्म के अपमान का बदला लेने और देश को आजाद करवाने के लिए बार—बार किये। देश को आजाद कराने के लिए मराठों ने एक दो बार नहीं बल्कि सौ वर्षों तक लगातार हमले किए। मराठा सरदार महादजी शिंदे (सिंधिया) के समय मराठों ने दिल्ली पर पूरी तरह से कब्जा कर लिया था और लाल किले पर भगवा ध्वज लहराया था। बाजीराव पेशवा ने दिल्ली पर हमला किया और विजयी रहे थे।

1689 में औरंगजेब ने शिवाजी के पुत्र संभाजी महाराज को मार डाला था और उनकी पत्नी यशोबाई को बंदी बना लिया था। वे तीस वर्षो तक कैद में रहीं। 1707 में औरंगजेब की मृत्यु के बाद यशोबाई को लालकिले में भेज दिया गया था। पहली बार पेशवा बाजीराव के पिता बालाजी विश्वनाथ भट्ट ने 1719 में शिवाजी की पुत्रवधु यशोबाई को लाल किले से छुड़ाने के लिए दिल्ली पर हमला किया था और सफल हुए थे। यशोबाई संभाजी महाराज की पत्नी (छत्रपति साहू जी महाराज की माता) थी। यशोबाई को छुड़ाने के बाद मराठों ने उत्तर की ओर रुख किया। बाजीराव पेशवा के नेतृत्व में अटक (पाकिस्तान में) तक भगवा लहराया। मराठों ने पहली बार अफगानों और रोहिल्लों को खैबर के उस पार भगाया था। अटक के बाद पेशावर पर भी कब्जा किया। मराठा सेनापति बापूजी त्र्यंबक ने मुल्तान और डेरा गाजी खान पर भी अपना कब्जा कर लिया था लेकिन रघुनाथ राव और उनके सहयोगी मल्हार राव दिल्ली पर कब्जा करने को उत्सुक थे। 1759 में रघुनाथ राव, दत्ताजी शिंदे और जनकोजी शिंदे के साथ दिल्ली की ओर रवाना हुए ब्रिटिश और मुगल इतिहास के अनुसार पराक्रमी मराठा पेशवा बाजीराव ने अपने भाई रघुनाथ राव को मल्हार राव होलकर के साथ दिल्ली पर हमला करने भेजा था जिन्होंने अगस्त 1757 में दिल्ली की मुगल सल्तनत को परास्त करके अगले वर्ष 1758 में रोहिल्ला और अफगानों के सम्मिलित हमले में धूल चटाई। रोहिल्ला सेनापति नजीब खान ने मराठों के सामने समर्पण कर दिया और उनकी कैद में रहा। दिल्ली पर इस दौरान मराठों का राज हुआ और उन्होंने

पराक्रम और परोपकार से दिल्ली को सींचा।

मराठों ने 1760 में लाल किले के दीवान–ए–खास की छत से चांदी की परत को निकलवाकर नौ लाख रुपये की कीमत के सिक्के बनवा लिए थे। इतिहास गवाह है कि 1771 और 1788 में महादजी शिंदे के नेतृत्व में दिल्ली पर मराठों का हमला तथा कब्जा हुआ था। दिल्ली की मुगलिया सल्तनत महादजी शिंदे के नियंत्रण में थी। वे लाल किले के तख्त पर बैठे थे। लगभग 15 वर्ष दिल्ली के लाल किले पर भगवा झंडा लहराया था। अंग्रेजों ने 11 सितंबर 1803 को पटपड़गंज में मराठों के साथ हुए युद्ध में दिल्ली को जीता था। ऐसे में अंग्रेजों ने दिल्ली को मुगलों से नहीं मराठों से लिया था। अंग्रेजी सेना और फ्रांसीसी कमांडर लुई बारक्विएन के नेतृत्व में मराठों की सेना के बीच 11 सितंबर 1803 को पटपड़गंज के समीप यह युद्ध दिल्ली के युद्ध के नाम से ही जाना जाता है।

एम्स की स्टडी

आधा घंटा योग कमर दर्द और कई बीमारियों में लाभदायक

मात्र आधे घंटे योग करने से शरीर को काफी लाभ होता है। यदि कोई व्यक्ति कठिन योगासन नहीं कर सकता है तो सामान्य योगासन भी बेहतर परिणाम दे सकता है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) द्वारा किए गए अध्ययन में यह सामने आई है। अध्ययन में एम्स ने कमर दर्द और तमाम प्रकार के बीमारियों के बारे में बताया कि योग करने से काफी फायदा है। योग के परिणाम जानने के लिए करीब 108 मरीजों पर अध्ययन किया गया।

इस अध्ययन में मरीजों को दो वर्ग में विभाजित किया गया। एक वर्ग में शामिल 58 मरीजों को योग कराया गया। दुसरे वर्ग के 50 मरीजों को दवाओं के साथ सामान्य व्यायाम कराया गया। करीब आठ सप्ताह तक किए गए इस अध्ययन में पाया गया कि योग करने वाले मरीजों के कमर दर्द में काफी सुधार हुआ। साथ ही दिमाग में दर्द सहने की शक्ति में भी वृद्धि पाई गई। योग करने वाले मरीजों को दवाओं की जरूरत भी कम हो गई।

जुलाई एवं अगस्त माह प्रमुख पर्व-त्योहारों का विवरण

दिनांक	दिन	त्यौहार
3 जुलाई	सोमवार	गुरु पूर्णिमा
4 जुलाई	मंगलवार	श्रावण मास प्रारंभ
18 जुलाई	मंगलवार	पुरुषोत्तम (अधिक) मास प्रारंभ
26 जुलाई	बुधवार	कारगिल विजय दिवस
14 अगस्त	सोमवार	अखंड भारत, विभाजन की विभीषिका
15 अगस्त	मंगलवार	स्वतंत्रता दिवस
16 अगस्त	बुधवार	अमावस्या, पुरुषोतम मास समाप्त
19 अगस्त	शनिवार	हरियाली तीज
21 अगस्त	सोमवार	नागपंचमी
23 अगस्त	बुधवार	गोस्वामी तुलसी दास जयंती
30 अगस्त	बुधवार	रक्षाबंधन

किन्नर कैलाश

हिमाचल देवभूमि होने के साथ भगवान शिव की साधना स्थली भी है। किन्नौर का किन्नर कैलाश इंद्रधनुषी सौन्दर्य के अलावा शिव पार्वती की साधना स्थली भी माना जाता है। गगनचुंबी पर्वत श्रृंखलाओं से रक्षित किन्नौर में किन्नर कैलाश का पौराणिक महत्व है।

धर्मग्रंथों में प्राप्त उल्लेख के अनुसार किन्नर कैलाश भगवान शिव का साधना आसन है। यह समुद्रतल से 18168 फुट की ऊंचाई पर स्थित है। यह गांव पौआरी की विशालकाय पर्वत चोटी पर विराजमान है। इसी पर्वत पर करीब 60 फुट ऊंचा तिकोना पत्थर पर भव्य शिवलिंग है। साथ ही चारों दिशाओं में रेत का सिंहासन सा बना हुआ है। किंवदंती है कि भगवान शिव यहां बैठ कर तप किया करते थे। इस शिवलिंग की एक चमत्कारिक बात यह है कि यह दिन में तीन रंग बदलता है। सुबह काला दोपहर में सफेद व चार बजे तक सुनहरी रंग कल्पा से देखने पर स्पष्ट दिखाई देता है।

इस शिवलिंग से एक किलोमीटर पीछे पार्वती कुंड भी है। किंवदंती के अनुसार इस कुंड में पार्वती जी स्नान किया करती थीं। कहा जाता है कि गांव सांगला में गंगारंग खड्ड का पानी और गांव रकछम की गौगांरग खड्ड का पानी इसी कुंड से निकलता है। इसी कारण सांगला के गंगारंग खड्ड के पानी को स्थानीय देवी –देवता अपने शुद्धिकरण के लिए प्रयोग करते आ रहे हैं। कुछ लोग भी इस पानी का सेवन गंगा जल के रूप में करते हैं और इस पानी के प्रयोग से कई बीमारियों से निजात मिलती है स्थानीय लोग इसे बहुत लाभप्रद मानते हैं।

शिवलिंग के चारों तरफ दूर–दूर तक मनोहारी पर्वतमालाएं हैं। ग्लेशियर, झीलें और एक मायावी माहौल है। पर्वत चोटी पर शिवलिंग तक पहुंचने में जोखिम उठाकर 8 अगस्त 1990 को एक पांच सदस्यीय दल के पर्वतारोहियों ने पहली बार कामयाबी हासिल की थी। बाद में इस दल को किन्नौर के उपायुक्त ने साहस के लिए सम्मानित भी किया था। तभी से ही किन्नर कैलाश का दर्शन करने हजारों श्रद्धालु दूर–दूर से आते हैं।

किन्नर कैलाश परिक्रमा ठंगी गांव से चारंग गांव होते हुए रांरिक टुकमा बौद्ध मठ के दर्शन करने के उपरांत फिर अगले पड़ाव लालन्ति दर्रा और अंतिम छितकुल गांव पहुंच कर किन्नर कैलाश परिक्रमा को संपूर्ण माना जाता है। यहां शिवभक्त श्रद्धालु बड़े साहस और जोखिम के साथ लालन्ति दर्रे से छितकुल पहाड़ी के अंतिम छोर पर हजारों फुट बर्फ से ढकी पहाड़ और गहरी खाई जो मौत के मुंह में धकेल सकती है उनकी परवाह किए बगैर इस पवित्र किन्नर कैलाश परिक्रमा को पूरा करते हैं।

– मातृवंदना

बेटियों के भविष्य के लिए है सुकन्या समृध्दि योजना

नरेन्द्र कुमार वर्मा

गरीब परिवार की बटियां अब बोझ नहीं समझी जाती। भारत सरकार ने गरीब परिवारों की कन्याओं के लिए सुकन्या समृध्दि योजना को लागू किया है। सुकन्या समृध्दि योजना एक छोटी बचत योजना है जो बेटियों के भविष्य में होने वाले खर्च की पूर्ति करती है। इस योजना में उच्च ब्याज की दर 7. 60 से 8 फीसदी तक प्रतिवर्ष मिलती है। एक परिवार में दो बालिकाओं का खाता खोला जा सकता है। गरीब परिवारों विशेषकर सेवा बस्तियों में रहने वाले परिवारों के लिए सुकन्या समृध्दि खाता एक वरदान है। इस योजना के माध्यम से गरीब परिवार की बेटियों को भविष्य में उच्च शिक्षा एवं विवाह में आर्थिक मदद मिलती है। केंद्र सरकार ने यह योजना 1 जनवरी 2015 से शुरू की थी। इस खाते में मिलने वाला ब्याज पूर्ण रुप से आयकर मुक्त होता है।

इस योजना में खाताधारक को वर्ष में एक हजार रुपये जमा करवाना अनिवार्य है। सेवा बस्तियों में रहने वाले गरीब परिवार हर माह अपनी बेटी के अकाउंट में 250 रुपये की राशि जमा करते हैं। अभिभावक इस योजना में 14 वर्ष तक ही पैसा जमा करते हैं। 21 वर्ष की अवधि पूर्ण होने पर सुकन्या खाता परिपक्व होता है। गरीब परिवारों के लिए यह स्मॉल सेविंग स्कीम लॉन्गटर्म के लिए बहुत सुरक्षित है। लगातार 15 वर्ष तक कोई भी अभिभावक अपनी बेटी के खाते में 250 रुपये से लेकर अपनी सुविधा के अनुसार धनराशि जमा कर सकता है। 15 वर्ष तक पैसा जमा करने के उपरांत 21 वें वर्ष में खाते में जमा धनराशि पर 8 फीसदी तक ब्याज के साथ संपूर्ण धनराशि प्राप्त होती है।

सुकन्या समृध्दि योजना की विशेषताए

1. एक दिन से लेकर 10 वर्ष की बालिकाएं इस योजना का लाभ प्राप्त कर सकती है
2. इस योजना में 1000 रुपये से लेकर 150000 रुपये तक वार्षिक जमा किए जा सकते है।
3. बालिका की आयु 18 वर्ष पूर्ण होने पर जमा राशि में से 50 फीसदी रकम उच्च शिक्षा के लिए निकाली जा सकती है।
4. सुकन्या समृध्दि योजना का खाता आप कही भी ट्रांसफर करवा सकते है।
5. बालिग होने पर बालिका स्वयं अपना खाता संचालित कर सकती है।
6. सुकन्या समृध्दि योजना का खाता किसी भी बैंक अथवा डॉकघर में खोला जा सकता है।
7. सुकन्या समृध्दि योजना का खाता खोलने के लिए बालिका का जन्म प्रमाण–पत्र, आयु प्रमाण–पत्र एवं माता–पिता का आधार होना जरुरी है।
8. सुकन्या समृध्दि योजना में अभिभावकों को केवल 15 वर्ष तक ही पैसा जमा करना होता है।

संजय सिंह बघेल

हॉस्पिटैलिटी क्षेत्र में बना सकते है अपना कैरियर

हॉ हॉस्पिटैलिटी यानि आतिथ्य एवं पर्यटन उद्योग के क्षेत्र में करियर और नौकरी की संभावनाएं असीमित हैं। आतिथ्य क्षेत्र में संपूर्ण सेवा उद्योग शामिल है जिसमें आवास, भोजन और पेय सेवा, कार्यक्रम योजना, थीम पार्क और परिवहन शामिल हैं। एक प्रतिष्ठित शीर्ष होटल प्रबंधन संस्थान से संदर्भित होटल प्रबंधन शिक्षा पूरी करने और प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद छात्रों के लिए नौकरी के व्यापक दरवाजे खुल जाते हैं।

पात्रता मानदंड :

आतिथ्य प्रबंधन से जुड़े किसी भी पाठ्यक्रम के लिए निम्लिखित पात्रता मानदंड इस प्रकार हैं :

- उम्मीदवार बारहवीं या समकक्ष कक्षा किसी मान्यता प्राप्त बोर्ड के साथ उत्तीर्ण किया हो।
- कई कॉलेजों में प्रवेश के लिए यह आवश्यक है कि उम्मीदवार ने 12वीं कक्षा के स्तर पर अध्ययन के मुख्य विषय के रूप में अंग्रेजी का अध्ययन किया हो और न्यूनतम 55 प्रतिशत कुल अंक के साथ उसे उत्तीर्ण किया हो।
- कई शीर्ष प्रतिष्ठित संस्थान जैसे आईएचएम, आदि राष्ट्रीय प्रवेश परीक्षा, एनसीएचएम जेईई के आधार पर छात्रों को प्रवेश देते हैं। इसलिए एक उम्मीदवार के लिए इस प्रवेश परीक्षा में शामिल होना आवश्यक हो जाता है।

हॉस्पिटैलिटी के क्षेत्र

- हाउसकीपिंग
- खाद्य और पेय सेवा
- बेकरी और कन्फेक्शनरी
- फ्रंट ऑफिस मैनेजमेंट केटरिंग
- पाककला और पर्यटन प्रबंधन
- टूर संचालन, किराया और टिकटिंग

हॉस्पिटैलिटी में करियर स्कोप

हॉस्पिटैलिटी उद्योग में करियर का दायरा बहुत बड़ा है और ग्राफ ऊपर की ओर बढ़ता ही जा रहा है, जिससे निकट भविष्य में बड़ी संख्या में उम्मीदवारों की तैनाती सुनिश्चित होगी।

रोजगार के क्षेत्र :

हॉस्पिटैलिटी में डिग्री, डिप्लोमा या सर्टिफिकेट कोर्स करने वाले किसी भी उम्मीदवार के लिए उनकी क्षमता और योग्यता के अनुसार रोजगार के अलग– अलग अवसर उपलब्ध हैं यथा : होटल प्रबंधन स्नातकों के लिए रोजगार के विभिन्न क्षेत्रों में शामिल हैं :

- एयरलाइन में खानपान और केबिन सेवाएं
- क्रूज शिप होटल प्रबंधन
- क्लब प्रबंधन
- रसोई प्रबंधन (होटलों में या कॉलेज, स्कूलों, कारखानों, कंपनी गेस्ट हाउस आदि में कैंटीन चलाने में)
- गेस्ट हाउस, रिसॉर्ट्स
- रेलवे, बैंकों, सशस्त्र बलों, शिपिंग कंपनियों आदि के खानपान विभाग।
- वन लॉज
- अस्पताल प्रशासन और खानपान
- भारतीय नौसेना में आतिथ्य सेवाएं
- होटल और पर्यटन संघ (उदाहरण के लिएरू राज्य पर्यटन विकास निगम)
- विभिन्न बहुराष्ट्रीय कंपनियों में आतिथ्य सेवाएं

कारपेंटर और प्लम्बर के क्षेत्र में रोजगार

बढ़ई और प्लंबर का काम लगभग हर निर्माण स्थल में आवश्यक कार्यों में गिने जाते हैं। इसके बिना किसी भी बड़ी इमारत की कल्पना नहीं की जा सकती हैं। दो एक समान से लगने वाले सामान्य से पेशे में कई बुनियादी असमानताएं भी है और एक दूसरे से भिन्न भी हैं।

बढ़ई (कारपेंटर) क्या है?

एक बढ़ई एक प्रशिक्षित व्यवसायी है जो मुख्य रूप से लकड़ी के साथ काम करता है और इमारतों के ढांचे के निर्माण और खिड़कियां और मोल्डिंग जैसे कामों में संलग्न होता है। इसके मुख्य काम हैं :

- ❖ किसी इमारत अथवा बड़े कार्यलयों की ब्लूप्रिंट जैसे तकनीकी रेखाचित्रों तैयार करना।
- ❖ लकड़ी, शीशे रेशा, प्लास्टिक या अन्य सामग्री से दीवारें, फर्श और संरचनाएं बनाना।
- ❖ ड्राईवॉल या कैबिनेट लगाना
- ❖ सामग्री को मापना, काटना और बन्धन करना
- ❖ किसी भी क्षतिग्रस्त ढांचे या अन्य संरचनाओं का निरीक्षण करना और उन्हें बदलना
- ❖ बिजली उपकरणों का उपयोग करना।

एक बढ़ई बनने के लिए प्रमाणन की आवश्यकता नहीं है, लेकिन इसे प्राप्त करने से उन्हें एक विशिष्ट क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करने के लिए तैयार किया जा सकता है, जैसे रीमॉडेलिंग। कुछ बढ़ई का अपना व्यवसाय है, जबकि अन्य ठेकेदारों या निर्माण कंपनियों के लिए काम करते हैं।

प्लंबर क्या है?

प्लंबर का काम भी किसी इमारत अथवा कार्यालय के काम से जुड़ा होता हैं। यह पूरी इमारत की उस अंदरूनी अन्तसंरचना का इंजीनियर होता हैं जिसके माध्यम से किसी भी घर से लेकर बड़े होटलों और कार्यालयों के पूरे पानी की व्यवस्था से लेकर मलमूत्र विसर्जन की सम्पूर्ण प्रक्रिया को घर के भीतर ही भीतर संचालित करने में महारत हासिल किया होता हैं। प्लम्बर के सामान्य कर्तव्यों में शामिल हैं :

- ❖ नए भवन में पाइप लगाना और यह सुनिश्चित करना कि वे ठीक से काम कर रहे हैं
- ❖ क्षतिग्रस्त पाइपों और सेप्टिक टैंकों का निरीक्षण, रखरखाव और प्रतिस्थापन
- ❖ अस्थायी और दीर्घकालिक समाधान खोजने के लिए नलसाजी संबंधी समस्याओं का निवारण करना और सर्वोत्तम प्रथाओं का उपयोग करना
- ❖ निर्माण परियोजनाओं, मकान मालिकों और उपयोगिता कंपनियों के लिए पाइप स्थापना डिजाइन करना
- ❖ सिंक, वॉटर हीटर, शौचालय, बाथटब और शावर आदि को स्थापित करना और उनकी मरम्मत करना

प्लंबर के लिए प्लंबिंग व्यवसायों के लिए काम करना सबसे आम है, हालांकि कुछ का अपना व्यवसाय हो सकता है या विनिर्माण क्षेत्र में काम कर सकता है।

शिक्षा -

दोनों करियर के लिए देखा जाय तो किसी योग्यता से अधिक अनुभव और अभ्यास की जरूरत होती हैं।

गायत्री मंत्र

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम भर्गो देवस्य धीमहि।
धियो यो नः प्रचोदयात्।।

भावार्थ – उस प्राणस्वरूप, दुखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशनाशक, देवस्वरूप परमात्मा का हम ध्यान करें. वो परमात्मा हमारी बुद्धि को सन्मार्ग में प्रेरित करें।

सरस्वती गायत्री मंत्र

ॐ सरस्वत्यै विद्महे, ब्रह्मपुत्र्यै धीमहि।
तन्नो देवी प्रचोदयात्।।

गणेश गायत्री मंत्र

ॐ लम्बोदराय विद्महे महोदराय धीमहि
तन्नो दंती प्रचोदयात्।।
ॐ एकदन्ताय विद्महे, वक्रतुण्डाय धीमहि,
तन्नो दन्ति प्रचोदयात्।।
ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि
तन्नो दंती प्रचोदयात्।।

शिव गायत्री मंत्र

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि
तन्नो रुद्र प्रचोदयात्।।

ब्रह्म गायत्री मंत्र

ॐ चतुर्मुखाय विद्महे हंसारूढाय धीमहि
तन्नो ब्रह्मा प्रचोदयात्।।
ॐ वेदात्मने विद्महे, हिरण्यगर्भाय धीमहि,
तन्नो ब्रह्म प्रचोदयात्।।

लक्ष्मी गायत्री मंत्र

ॐ महादेव्यै च विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात्।।

दुर्गा गायत्री मंत्र

ॐ कात्यायन्यै विद्महे, कन्याकुमार्ये च धीमहि,
तन्नो दुर्गा प्रचोदयात्।।

हनुमान गायत्री मंत्र

ॐ आञ्जनेयाय विद्महे महाबलाय धीमहि
तन्नो हनूमान् प्रचोदयात्।।

आपका सहकार

इन्द्रप्रस्थ विश्व संवाद केंद्र न्यास के माध्यम से समाज निर्माण का कार्य किया जा रहा है। समाज का कोई भी कार्य समाज की सज्जन शक्ति की सहायता के बिना संभव नहीं है। हमें भी समाज की सज्जन शक्ति से सहायता एवं सहयोग की अपेक्षा है।

समाज एवं राष्ट्र निर्माण के लिए हमें दी गई सहायता राशि पर

आप आयकर अधिनियम 1961 की धारा

80 जी के तहत कर छूट ले सकेंगे।

PAN : AAATI6126P

Unique Registration Number : AAATI6126PF20221

बैंक एकाउंट विवरण

Name : INDRAPRASTHA VISHWA SAMVAD KENDRA NYAS

BANK : BANK OF BARODA | A/C NO. (SAVING) : 71270100014227 | IFSC : BARB0DBALIP

BRANCH : ALIPORE ROAD, NEW DELHI BRANCH, DELHI - 110054

बरसात के मौसम में होने वाली बीमारियां कारण और बचाव

✍ डॉ. विवेक दीक्षित

क्या आप बारिश से बीमार हो सकते हैं? सदियों पुराने इस सवाल ने लोगों को हैरान कर दिया है कि वास्तव में बारिश किसी को बीमार कैसे कर सकती है। कई लोगों के लिए, विशेष रूप से वृद्ध लोगों के लिए, फ्लू के मौसम का बरसात के मौसम से गहरा संबंध है। यह इस समय के दौरान है कि खांसी और जुकाम के मामले प्रचलित हैं; इस प्रकार, उनका मानना था कि बारिश से भीगना ही लोगों को बीमार बनाता है।

बहरहाल, मामला यह नहीं। हां, बारिश में भीगने से लोग बीमार हो सकते हैं। लेकिन वजह इस बात में है कि इस दौरान वायरस कितने प्रभावी तरीके से शरीर को संक्रमित कर पाते हैं। राइनोवायरस एक वायरस है जो सामान्य सर्दी का कारण बनता है जो ठंडे तापमान में जीवित रह सकता है और फैल सकता है। यह नाक या गले की गुहा से जुड़ सकता है, जिसका तापमान शरीर के कोर से कम होता है। यह आक्रमण इन विषाणुओं से लड़ने के लिए प्रतिरक्षा प्रणाली को सक्रिय करता है, जिससे व्यक्ति थका हुआ और बीमार महसूस करता है, खासकर यदि विशेष तनाव शरीर के लिए नया हो।

भारत में मानसून का मौसम जून के महीने में आता है और सितंबर तक रहता है। यह सभी को तरोताजा कर देता है, लेकिन मौसम नम रहता है और यह कीटाणुओं के पनपने के लिए आदर्श है और मच्छरों के लिए एक आदर्श प्रजनन समय है। बरसात के मौसम में मलेरिया, डेंगू, चिकनगुनिया और टाइफाइड जैसी घातक बीमारियाँ आम बीमारियाँ हैं और इनमें से लगभग सभी में बुखार, कमजोरी और शरीर में दर्द जैसे कुछ सामान्य लक्षण मौजूद होते हैं।

बारिश से भीगने से सर्दी, बुखार और अन्य फ्लू जैसे लक्षण हो सकते हैं। आमतौर पर भीगने के बाद बारिश की बूंदाबांदी से भी व्यक्ति अस्वस्थ महसूस करने लगता है। छींक आना पहला संकेत है, इसके बाद मांसपेशियों में दर्द और फिर बुखार आता है।

बारिश से बीमार होने से बचने के ६ टिप्स

बारिश कैसे किसी व्यक्ति को बीमार कर देती है, यह समझने से वायरस से बचाव के लिए आवश्यक उपायों को निर्धारित करने में मदद मिलेगी।

1. बाहर जाते समय छाता साथ ले जाएं
2. तुरंत नहा लें
3. प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करें
4. साबुन से हाथों को अच्छी तरह धोएं
5. ठंड के मौसम में गर्म कपड़े पहनें
6. हल्का व्यायाम करें

लव जिहाद की भेंट चढ़ी 16 वर्षीय लड़की

राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में लव जिहाद का ग्राफ लगातार बढ़ता जा रहा है। बीते दिनों राजधानी के शाहबाद डेयरी इलाके में एक हिंदू बालिका साक्षी की हत्या चर्चा का विषय बनी हुई है। इस हत्याकांड के सीसीटीवी फुटेज देखकर कलेजा मुंह को आ जाता है। जिहादी मानसिकता वाले युवक ने जिस तरह से साक्षी को मारा डाला उसकी तस्वीरें हमें सोचने पर मजबूर कर देती हैं। जिहादी मस्लिम युवक साहिल शाहबाद डेयरी इलाके में रहने वाली साक्षी नाम की लड़की के संपर्क में था। साहिल ने हिंदू नाम बता कर साक्षी से दोस्ती की थी। मगर जब साक्षी को उसके मुसलमान होने का पता चला तो उसने साहिल से दूरी बना ली थी।

साक्षी के बातचीत बंद करने के बाद साहिल ने उसकी हत्या की साजिश रच डाली। घटना वाले दिन साक्षी अपनी एक सेहली के साथ अपनी मित्र के जन्मदिन की पार्टी में शामिल होने के लिए जा रही थी। साहिल ने जैसे ही उसे गली में जाते देखा तो उसका पीछा किया और बीच गली में रोककर साक्षी के शरीर को चाकू से गोद डाला। करीबन 40 बार साक्षी पर चाकू से हमला करने के बाद भी दरिंदा साहिल नहीं रुका उसके सड़क पर लहूलूहान पड़ी बेबस लड़की के सिर को पास में पड़े पत्थर से कुचल डाला। दिल्ली में सरेआम हुए इस हत्याकांड को आसपास के लोग तमाशबीन बने देखते रहे।

साक्षी की हत्या के बाद साहिल खून से सना हुआ चाकू रिठाला मेट्रो के पास फेंककर फरार हो गया। सरेआम एक लड़की की हत्या के बाद जब पुलिस भी मौके पर पहुँची तो साक्षी की मौत हो चुकी थी। साक्षी की हत्या के बाद जिहादी साहिल अपनी बुआ के घर बुलंदशहर जाकर छिप गया। जहां से दिल्ली पुलिस ने उसे गिरफ्तार किया। पुलिस ने साक्षी के कत्ल में इस्तेमाल चाकू भी रिठाला इलाके से बरामद कर लिया गया। साक्षी के हत्या के बाद अनेक हिंदुवादी संगठनों ने शाहबाद इलाके में प्रदर्शन कर लव जिहाद से हिंदु बेटियों की रक्षा की मांग उठाई। देश की राजधानी में लव जिहाद की इस घटना ने सबको हिला कर रख दिया। 16 साल की एक मासूम लड़की जिहादी इस्लामिक मानसिकता की भेंट चढ़ गई। हिंदु समाज को इस तरह की घटनाओं से सचेत रहना चाहिए। खासतौर पर अपने बेटियों को लव जिहाद के बारे में जानकारी दें। बेटियों को इस्लामिक विचारधारा वाले लोगों से सुरक्षित रहने की आवश्यकता है।

एकरस हिन्दू समाज बनाने की आवश्यकता

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अखिल भारतीय बौद्धिक शिक्षण प्रमुख स्वांतरंजन ने कहा कि समाज जब संगठित होता है तो उसका परिणाम दिखता है। संघ ने हिन्दू समाज को संगठित किया है। उसके परिणाम है दृ राम मंदिर बन रहा है, धारा 370 हटी है, हिन्दू एक ताकत है। लेकिन अभी भी समाज में व्याप्त जातिगत भेदभाव दूर करने की आवश्यकता है। देश के समक्ष जो चुनौतिया हैं, उनका निवारण समाज जागरण से ही संभव है। एकरस समाज बनाने की आवश्यकता है। स्वांतरंजन जी संघ शिक्षा वर्ग के समापन समारोह में संबोधित कर रहे थे।

आदर्श विद्यामंदिर विद्यालय परिसर में चल रहे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ राजस्थान क्षेत्र के 20 दिवसीय संघ शिक्षा वर्ग द्वितीय वर्ष (सामान्य) का समापन कार्यक्रम में स्वयंसेवकों ने दंड युद्ध, नियुद्ध, यष्टि, योग और संचलन का प्रदर्शन किया। समारोप कार्यक्रम में हिन्डौन और आसपास के क्षेत्र से बड़ी संख्या में महिलाएं और पुरुष सम्मिलित हुए।

मुख्य अतिथि समाजसेवी हरिमोहन बरनाला ने वर्ग के समरस वातावरण पर प्रसन्नता व्यक्त की। वर्ग कार्यवाह गेंदालाल ने बताया कि 252 शिक्षार्थियों ने 20 दिन तक विद्यालय परिसर में रहकर यह प्रशिक्षण पूर्ण किया है। इस दौरान मोबाइल से दूर रहकर राष्ट्रीय विचार के शिक्षण में लीन रहे। वर्ग में तीन दिवस तक सरसंघचालक डॉ। मोहन भागवत जी स्वयंसेवकों के साथ रहे। 20 दिनों में 7 हजार 200 परिवारों से वर्ग में भोजन का सहयोग प्राप्त हुआ। जिला संघचालक बनवारी लाल ने सभी का धन्यवाद व्यक्त किया।

मेधावी छात्र छात्राओं का सम्मान

महर्षि वाल्मीकि मंदिर निर्माण समिति एवं ें। सरस्वती विहार जिला द्वारा 11 जून 2023 को आर्य समाज मंदिर शकूरपुर में कमजोर वर्ग के 10वी एवं 12 वी के मेधावी छात्र छात्राओं का सम्मान समरोह आयोजित किया गया। कार्यक्रम में 55 छात्र छात्राओं को सम्मानित किया गया। ये सभी छात्र छात्राएं 10वीं 12वीं में उत्तम अंक लेकर उत्तीर्ण हुए हैं। 12 वीं कक्षा की अभिन्या ने 93 प्रतिशत, मुस्कान ने 90.6 प्रतिशत गौरव ने 90 प्रतिशत अंक प्राप्त किए।

कार्यक्रम में मुख्य अतिथि सरस्वती विहार जिला संघचालक वेदप्रकाश जी, विभाग सामाजिक समरसता संयोजक सोमनाथ जी, सेवा भारती जिला मंत्री अनुज जी, नगर कार्यवाह प्रभाकरण जी, क्षेत्र से थानाध्यक्ष धीरज यादव जी रहे। कार्यक्रम में 14 बिरादरी प्रमुख एवं अनेक समाजिक कार्यकर्ताओं ने भी भाग लिया। इस कार्यक्रम से बच्चों को स्टेशनरी मोमेंटो और श्रीमदभगवत गीता देकर सम्मानित किया गया।

खेल-खेल में बच्चों को सिखाएं

अंजू पाण्डेय

जब कभी हम बच्चों की बात करते हैं तो अक्सर हमें अपना बचपन याद आ जाता है। किस प्रकार हम बचपन में तरह–तरह के खेल खेला करते थे, यह बात बचपन में भले ही समझ में ना आती हो पर बड़े होते– होते हम इस बात को समझ जाते हैं कि हमने यह बात बचपन में खेले गए खेल के द्वारा ही सीखी थी। अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि बच्चों को यदि कोई भी रचनात्मक, सृजनात्मक या अन्य बातें सिखानी हो तो उन्हें खेल के द्वारा ही सिखाना सबसे उचित रहता है, यदि कोई संदेश देना हो तो भी हम किसी खेल या कहानी का ही सहारा लेते हैं।

खेल से बच्चों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक विकास तो होता ही है इसके अलावा उनके अंदर सहनशीलता, धैर्य और नए–नए विचार भी उत्पन्न होते है।

रचनात्मकता के विभिन्न पहलू :

1. समय–समय पर बच्चों से बात करना

बच्चों के साथ संवाद करते समय हमें उनके आयु वर्ग का ध्यान रखना चाहिए, यदि आप उनसे बात नहीं करेंगे तो बच्चे अपने मन की जिज्ञासा को शांत नहीं कर पाएंगे, और हो सकता है वह आपसे खुलकर बात ना कर पाए। जो बच्चे चंचल स्वभाव के होते हैं वह तो बात कर लेते हैं लेकिन कुछ बच्चे शर्मीले या शांत स्वभाव के होते हैं जिनके अंदर झिझक ज्यादा होती है ऐसे बच्चों पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

2. उनसे प्रश्न पूछना

बच्चों से प्रश्न पूछ कर उनके उत्तर का इंतजार करना चाहिए तथा उन्हें बोलने का मौका भी देना चाहिए, जिससे कि उनकी मानसिक क्षमता भी बढे। चाहे वह

गलत ही बोले, हो सकता है आप उनके उत्तर से संतुष्ट ना हो लेकिन उनके उत्तर को ध्यान पूर्वक सुनकर उन्हें शाबाशी देते हुए बताना चाहिए कि आपने बहुत अच्छा बोला लेकिन इसका उत्तर ऐसा भी हो सकता है।

3. बुद्धि परीक्षण

बच्चों को कुछ समस्याएं देनी चाहिए जिससे कि वह उसे सुलझाने में अपना स्वयं का दिमाग विकसित कर सकें, जैसे कुछ पहेली, पज़ल गेम इत्यादि। इसके लिए कुछ कार्डबोर्ड अलग–अलग रंगों के ब्लॉक आदि का प्रयोग भी किया जा सकता है।

4. बोलकर सिखाना

छोटे बच्चे अक्सर सुनकर सबसे ज्यादा सीखते हैं, इसलिए उन्हें कुछ भी सिखाने के लिए बोलकर सिखाना सबसे बेहतर होता है, जैसे :– यदि उन्हें गिनती सिखानी है तो 1,2,3बैठो इसको गिनो, 2,3,4 चलो– चले बाजार, 4,5,6 सबसे मिलकर रहे। इस प्रकार से कविता के रूप में हम उन्हें जल्दी सीखा सकते हैं।

5. समय–समय पर प्रतियोगिताएं करवाना

बच्चों को सिखाने का सबसे सही तरीका है उन्हें समय–समय पर प्रतियोगिताओं के आयोजन द्वारा कुछ भी काम करने को कहना, इससे जिस बच्चे की रुचि जिस काम में होगी वह सामने आ जाती है, इसके अलावा एक समय सीमा के अंदर अपने काम को खत्म करने की क्षमता बढ़ती है।

6. धैर्य परीक्षण

खेल के द्वारा बच्चों के अंदर धैर्य का भी परीक्षण होता है, क्योंकि किसी भी खेल में एक पक्ष की हार और एक पक्ष की जीत निश्चित होती है, जिससे बच्चे को हारने के बाद धैर्य रखना आ जाता है तथा अगली बार वह जीतने के लिए प्रयत्न भी करता है।

7. टीम वर्क

किसी भी खेल को कोई भी अकेले नहीं खेल सकता उसे एक टीम की जरूरत होती है तथा जीतने के लिए टीम का एक साथ होना भी जरूरी है। खेल के द्वारा बच्चों के अंदर टीम में काम करना तथा अपनी टोली को साथ लेकर चलने कि कला का विकास भी होता है।

8. संस्कारों का ज्ञान

छोटी–छोटी कहानियों को खेल के द्वारा समझाने के लिए हम उन्हें कोई भी रोल प्ले करने के लिए तैयार कर सकते हैं, जैसे :– पर्यावरण संरक्षण, वन जीव हत्या। इस नाटक के द्वारा बच्चे कोई ना कोई पेड़ लगाएं और उसका संरक्षण करें, जिसका पेड़ अच्छा हरा–भरा रहेगा वह जीत जाएगा। इस तरह का एक कंपटीशन भी करवाया जा सकता है।

9. सेवा के कार्य

बच्चों के खेल–खेल में कुछ सेवा के कार्य भी करवाते रहना चाहिए जैसे कभी किसी मंदिर प्रांगण, स्कूल, अस्पताल आदि के स्थल पर ले जाकर कुछ स्वच्छता का काम करवाना इससे बच्चों के अंदर सेवा भाव भी उत्पन्न होगा, अपने से बड़ों की सेवा करने के लिए प्रोत्साहित करना तथा घर में छोटे–मोटे काम भी करवाने चाहिए।

10. सामाजिक समरसता

बच्चों को एक साथ भोजन करवाना, कभी–कभी बच्चों को सेवा बस्ती में ले जाना, एक दूसरे की सहायता करना, किसी के घर जाकर कैसे शिष्टाचार निभाया जाता है इसके बारे में बताना जिससे कि उनका सामाजिक विकास भी हो सके।

शिक्षा की प्रकाश फैला रहे मास्टर रघुवीर सिंह

शिवनगर हस्तसाल जे.जे. कॉलोनी, विकास नगर में मास्टर रघुवीर सिंह शिक्षा के दीप की जोत जगाये हुए हैं। एक निर्धन परिवार से आने वाले मास्टर रघुवीर सिंह के 6 भाई व 2 बहनें हैं तथा पिताजी एक श्रमिक हैं। आप रेडिएंट पब्लिक स्कूल में एसएसटी व विज्ञान के शिक्षक हैं। इसके अतिरिक्त एक कोचिंग सेंटर चलाते हैं जिसमें 1 (पहली) कक्षा से लेकर 12 वीं कक्षा तक के क्षात्रों को व्यावसायिक रूप में पढ़ाते हैं। बच्चों को न केवल पढ़ाते हैं अपितु उन्हें भविष्य का मार्ग देखने, समझने में हर संभव प्रयास करते हैं। विद्यार्थियों को समझाते हुए कहते हैं कि आप डॉक्टर, इंजीनियर, साइंटिस्ट, व्यवसायी कुछ भी बनो लेकिन सबसे पहले देश का एक अच्छा इंसान बनो। सदैव सकारत्मक रहो।

मास्टर जी का सामाजिक कार्यो में झुकाव सदैव ही रहा है। वह आर्य समाज से भी पिछले 25 वर्षों से जुड़े हैं। प्रत्येक दिन पार्क जाना और योग इनकी दिनचर्या में है। पतंजलि सर्टिफाइड योग शिक्षक हैं तथा डीडीए हस्तसाल पार्क में निःशुल्क योग की कक्षायें चलाते हैं। आध्यात्म, प्राचीन आयुर्वेद के बारे में सभी को शिक्षित करते हैं। विद्यार्थियों में ज्ञान की प्रतियोगिता कराते हैं। गाँव में सभी से मिलकर एक पुस्तकालय का निर्माण कराया है। इसके अलावा मास्टर रघुवीर सिंह वोटर कार्ड, बैंकिंग कार्य, फॉर्म भरना, वकील आदि में सभी की मदद करते हैं। वह निःशुल्क यज्ञ भी करते हैं। सबसे अधिक बालक–बालिकाओं को उनके जीवन की दशा–दिशा शिक्षा के माध्यम से सुधारने का प्रयास करते हैं।

रघुवीर सिंह इंजीनियर बनना चाहते थे किन्तु नहीं बन पाये। परिस्थितियों के चलते दिन में नौकरी तो रात में पढ़ाई और यदि रात में नौकरी तो दिन में पढ़ाई। 1999 में आपके जीवन में एक ऐसा दिन आया की आपके दोनों बच्चे हस्पताल में और माँ का एक्सीडेंट हो गया जिस कारण आपको लगा कि यह वक्त कैसे कटेगा किन्तु जिजीविषा ने हार नहीं मानी और पुनः अपने पैरों पर खड़े हुए।

मास्टर रघुवीर सिंह एक प्राध्यापक के रूप में अपने स्कूल व कोचिंग सेंटर द्वारा हज़ारों सेवाबस्ती के बालक–बालिकाओं के जीवन को प्रकाशित कर रहे हैं। शिक्षक क्या होता है? कैसा होना चाहिए ये अगर देखना है तो आपसे मिलकर समझा जा सकता है।

– मनोज कुमार गुप्ता

स्वाद भी स्वास्थ भी

दालचीनी में ढेर सारे गुण

दालचीनी में यूजेनॉल, सिनामल्डिहाइड, आयरन, अमीनो एसिड, मैग्नीशियम, फाइबर और कैल्शियम होते हैं, जो पेट में संबंधित बीमारियों, जैसे कि पेट दर्द, गैस और कब्ज की समस्या को ठीक करते हैं। दूध के साथ दालचीनी पाउडर मिलाकर खाने से पाचन तंत्र सुचारु रूप से कार्य करता है। सुबह खाली पेट दालचीनी का पानी पीने से बॉडी का मोटाबॉलिज्म ठीक होता है, जिससे वजन कम करने, डायबिटीज नियंत्रित करने और बैड कोलेस्ट्रॉल को कम करने में सहायता मिलती है।

तेजपत्ते का सेवन शुगर को रखता है नियंत्रण में

चाहे घर में कोई सब्जी बन रही हो या फिर पुलाव दोनों में ही तेज पत्ते का प्रयोग खूब किया जाता है। इससे खाने का स्वाद तो बढ़ता ही है साथ तेज पत्ता स्वास्थ्य के नजरिए से भी बहुत लाभदायक है। आइए तेज पत्ता के गुणों के बारे में जानते हैं। तेज पत्ता में विटामिन–ए और विटामिन–सी पाया जाता है। ये दोनों ही विटामिन हमें अपनी डेली रूटीन लाइफ में चाहिए होते हैं। क्योंकि विटामिन–ए हमारी आंखों की समस्या को दूर करने का काम करता है और विटामिन–सी हमारे शरीर में वाइट ब्लड सेल्स की संख्या बनाए रखने में मदद करता है। अगर आपको पाचन से जुड़ी समस्याएं हैं तो आप तेज पत्ते का इस्तेमाल कर सकते हैं। पेट से जुड़ी कई समस्याओं में ये कारगर उपाय है। चाय में तेज पत्ते का इस्तेमाल करके कब्ज, एसिडिटी और मरोड़ जैसी समस्याओं से राहत पा सकते हैं। रात को सोने से पहले तेजपत्ते का इस्तेमाल करना अच्छी नींद के लिए बहुत फायदेमंद है। तेजपत्ते के तेल की कुछ बूंदों को पानी में मिलाकर पीने से अच्छी नींद आती है। किडनी स्टोन और किडनी से जुड़ी ज्यादातर समस्याओं के लिए तेजपत्ते का इस्तेमाल बहुत फायदेमंद होता है। तेज पत्ता शुगर के रोगियों में इंसुलिन की घटती–बढ़ती मात्रा को भी रेग्युलेट करने का काम करता है। इसे सूप मे पाउडर, चावल या पुलाव और दाल आदि में पूरा पत्ता स्मॉल पीस के रूप में उपयोग किया जा सकता है।

कटहल के कोफ्ते

सामग्री

250 ग्राम कटहली यानी छोटा कटहल, 01 आले (मध्यम), 50 ग्राम बेसन, 03 प्याज (मध्यम), 8–10 कली लहसुन, 1 ईंच टुकड़ा अदरक, 2 तेज पत्ते, 1 छोटा चम्मच हल्दी, 2 चम्मच सब्जी मसाला, 1 चम्मच गरम मसालर, 2 बड़े या 125 ग्राम टमाटर तलने के लिए सरसों का तेल स्वादानुसार नमक और मिर्च

ऐसे बनाएं

कटहल को छीलकर चार टुकड़ों में काट लें। प्रेशर कुकर में 500 मिलीलीटर पानी में कटहल और आलू को पहले तेज और फिर मध्यम आंच पर 1–1 सीटी आने तक पकाएं। लहसुन और अदरक को मिलाकर पेस्ट बना लें। एक प्याज को छीलकर पेस्ट बना लें और टमाटरों को धोकर प्यूरी बना लें। कटहल को ठंडा होने पर मसल लें या 1–2 राउंड मिक्सी में पीस लें। इसमें उबला आलू, चुटकी भर हल्दी, मिर्च, जरा–सा लहसुन–अदरक पेस्ट, बेसन और नमक डालकर मिलाएं। अब इसके नींबू के आकार के छोटो–छोटे गोले बनाकर गरम तेल में मध्यम आंच पर तलें। बाकी के प्याज को छीलकर बारीक काट लें। जब सभी कोफ्ते तल जाएं तो कड़ाही से तेल निकाल लें, बस दो बड़े चम्मच तेल रहने दें। इसमें तेज पत्ता और प्याज डालकर सुनहरा भूनें, फिर लहसुन–अदरक और प्याज के पेस्ट डालकर 5 मिनट भूनें। अब सब्जी मसाला, हल्दी, मिर्च पाउडर और टमाटर प्यूरी डालकर भूनें। जब मसाले तेल छोड़ने लगें तो जैसी ग्रवी चाहिए, उतना गरम पानी डालें। अब ग्रेवी में नमक डालकर तेज आंच पर पकाएं। उबाल आने पर गरम मसाला डालें और अच्छी तरह चलाने के बाद ग्रेवी में कोफ्ते डालकर मध्यम आंच पर 5–7 मिनट पकने दें। चावल या रोटी के साथ कटहल के कोफ्ते सर्व करें।

साबुन के खाली डिब्बे का किस्सा

यह जापान में प्रबंधन के विद्यार्थियों को पढ़ाया जाने वाला बहुत पुराना प्रसंग है। कई दशक पहले जापान में साबुन बनाने वाली एक बड़ी कंपनी की अपने एक ग्राहक से यह शिकायत मिली कि उसने साबुन का एक बड़ा पैक खरीदा था पर उसमें एक डिब्बा खाली निकला। कंपनी के अधिकारियों द्वारा जांच करने पर यह पता चला कि असेंबली लाइन में उत्पन्न किसी गड़बड़ के कारण साबुन के कई डिब्बे भरे जाने से चूक गए थे। कंपनी ने एक कुशल इंजीनियर को हजारों डिब्बों में से खाली रह गए डिब्बों का पता लगाने के लिए उपाय ढूंढने के लिए निर्देश दिया। काफी सोच विचार करने के बाद इंजीनियर ने असेंबली लाइन पर एक हाई–रिजोल्यूशन एक्स–रे–मशीन लगाने के लिए कहा जिसे दो तीन कारीगर मिलकर चलाते और एक व्यक्ति मॉनीटर की स्क्रीन पर निकलते जा रहे डिब्बों पर लगातार देखता रहता ताकि कोई खाली डिब्बा नहीं चला जाए। उन्होंने एक ऐसी मशीन लगा भी ली पर सब कुछ इतनी तीव्रता से होता था कि वे भरसक प्रयास करने के बाद भी खाली डिब्बों को पता नहीं लगा पा रहे थे। ऐसे में एक छोटे कारीगर ने कंपनी अधिकारियों को असेंबली लाइन पर एक बड़ा सा पंखा लगाने के लिए कहा। जब फरफराते हुए पंखे के सामने हर मिनट साबुन के सैकड़ों डिब्बे गुजरे तो उनमें मौजूद खाली डिब्बा सर्र से उड़कर दूर चला गया। इस तरह एक बड़ी वाली समस्या पलभर में आसान हो गई।

जीवन में भी अक्सर ऐसे अवसर आते हैं जब समस्याओं का समाधान बड़ा ही सरल होता है। लेकिन हम कई तरह के जटिल उपायों का उपयोग करते हैं। इससे हम मुश्किलों को सुलझाने के बजाये उन्हें और कठिन बना देते हैं।

सही दिशा

एक बार एक लंबा चौड़ा शक्तिशाली व्यक्ति समान लेकर किसी स्टेशन पर उतरा। उसने एक तक्सी टैक्सी वाले से कहा कि मुझे शिव मंदिर जाना है। टैक्सी वाले ने कहा 200 रुपये लगेंगे। उस व्यक्ति ने बुद्धिमानी दिखाते हुए कहा – इतने पास के 200 रुपया, आप टैक्सी वाले तो लूट रहे हो। मैं अपना सामान खुद ही उठा कर चला जाऊंगा। वह व्यक्ति काफी दूर तक अपना सामान लेकर चलता रहा। कुछ देर बाद पुनः उसे वही टैक्सी वाला दिखा, अब उस आदमी ने फिर टैक्सी वाले से पूछा भैया अब तो मैंने आधे से अधिक दूरी तय कर ली तो अब आप कितना रुपया लेंगे? टैक्सी वाले ने कहा 400 रुपया। उस आदमी ने फिर कहा पहले 200 रुपया और अब 400 रुपया, ऐसा क्यों?

टैक्सी वाले ने उत्तर दिया – महोदय इतनी देर से आप शिव मंदिर की विपरीत दिशा में चल रहे हैं जबकि शिव मंदिर तो दूसरी ओर है। उस व्यक्ति ने कुछ भी नहीं कहा और चुपचाप टैक्सी में बैठ गया। इसी तरह हम कई बार बिना गंभीरता से सोचें सीधा शुरू कर देते हैं और समय को बर्बाद कर देते है। फिर उस काम को आधा ही करके छोड़ देते हैं। किसी भी काम को हाथ में लेने से पहले पूरी तरह सोच विचार करें और जल्दबाजी न दिखाते हुए धैर्य से लक्ष्य की ओर बढ़ें।

विजयनगर

महान विजयनगर साम्राज्य की स्थापना दो वीर भाइयों हरिहर और बुक्काराव ने विद्यारण्य स्वामी (माधवाचार्य) के मार्गदर्शन में की थी। उन्होंने इस शहर को 1336 ई. में राजधानी के रूप में विकसित किया। यह ऐतिहासिक शहर दक्षिण भारत में तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित है। विजयनगर साम्राज्य का उद्देश्य सनातन धर्म के साथ–साथ संस्कृति की रक्षा और संरक्षण करना था। शविजयनगरम् पर संस्थापक संगमवंश के बाद शक्तिशाली राजवंश सालुववंश और तुलुववंश ने शासन किया। तुलुववंश के प्रतापी राजा कृष्णदेव राय ने विजयनगर साम्राज्य को अत्यन्त समृद्ध बनाया और मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा नष्ट किए गए मंदिरों का जीर्णोद्धार कराया।

सुश्रुत

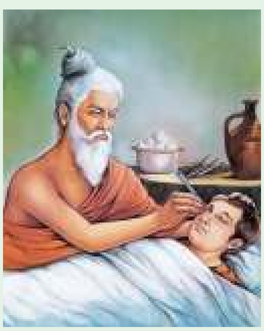

सुश्रुत आयुर्वेद के एक निष्णात आचार्य थे, जो विशेष रूप से शल्य चिकित्सा के लिए प्रसिद्ध थे। इन्हें शल्य चिकित्सा का जनक कहा जाता है। सुश्रुत शल्य क्रिया के लिए 125 तरह के उपकरणों का प्रयोग करते थे। इनका जन्म छठी शताब्दी ईसा पूर्व काशी में हुआ था। आयुर्वेद के महान ग्रन्थ सुश्रुत संहिता के प्रणेता हैं। इन्होंने 300 प्रकार की ऑपरेशन प्रक्रियाओं खोज करने के साथ ही कॉस्मेटिक सर्जरी में विशेष निपुणता हासिल की। सुश्रुत संहिता में मोतियाबिंद का ऑपरेशन करने की विधि को विस्तार से बताया गया है। सुश्रुत को मधुमेह व मोटापे के रोग की भी विशेष जानकारी थी। कहा जाता है कि उन्होंने काशी नरेश दिवोदास से शल्यतंत्र की शिक्षा प्राप्त की थी। उन्होंने अपने शिष्यों को शल्य चिकित्सा के सिद्धांत बताये और शल्य क्रिया का अभ्यास कराया। सुश्रुत संहिता में शल्य चिकित्सा के विभिन्न पहलुओं को विस्तार से समझाया गया है। उन्होंने शल्य क्रिया की जटिलता को देखते हुए कुछ उपकरण तैयार किये थे। इन उपकरणों में विशेष प्रकार के चाकू, सुइयां, चिमटियां आदि सम्मिलित हैं।

बोर्ड पर भक्ति काल के कुछ संत कवियों के नाम अक्षरों का क्रम बदलकर लिखे हुए हैं, उन्हें पहचान कर लिखिए

उत्तर- रघु, सियावर, रघुनंदन, रमण, रामरज, रामकिशोर, रामजी, रमित, रमेश, रामदेव, रामचरण, रामचंद्र, रामाया, रामानंद, रघुवर, दशरथनन्दन, कोदंडधारी, राघव, सियापति, अयोध्यापति, अवधेश

कौन है वो

गोलू बंदर ने कुछ विशेषताएं बताई हैं। उस आधार पर पहचानिए कि वो कौन सा प्राणी है

करंट मारने वाली मछली

ईल नाम की एक मछली है जो करंट मार सकती है। इसे इलेक्ट्रिक ईल नाम से जाना जाता है। दुनिया में सबसे ज्यादा इलेक्ट्रिक ईल मछलियां दक्षिण अमेरिकी नदियों में पाई जाती हैं। इस मछली के शरीर में उत्पन होने वाला करंट, इसके शरीर में मौजूद कुछ घटकों में होता है। जब ईल द्वारा उन रसायनों को उत्तेजित किया जाता है तो उसके सेल करंट उत्पन करते हैं, जो 200 वाट से लेकर 600 वाट तक हो सकता है। ईल मछली छोटी मछलियों का शिकार करने के लिए करंट का उपयोग करती है। यह अपने शरीर से लगभग 400 वाट का करंट छोड़ती है जिससे छोटी मछलियां तुरंत मर जाती हैं और यह उनका शिकार कर लेती है। आमतौर पर एक इलेक्ट्रिक ईल 10 वोल्ट जितनी बिजली पैदा करती है, लेकिन अगर वह पूरी क्षमता से ऐसा करे तो 800 वोल्ट तक की बिजली उत्पन्न कर सकती है। एक इलेक्ट्रिक ईल करंट के द्वारा मगरमच्छ तक को मार सकती है। बड़ी ईल की लंबाई लगभग 8 फुट तक हो सकती है और इनका वजन 42 पॉउंड तक होता है। यह अपना पूरा समय समुद्र के अंदर नहीं बिता सकती हैं। किसी सांप की तरह दिखने वाली इस मछली को सांस लेने के लिए समुद्र से बाहर आना पड़ता है।

दिमाग की बत्ती

पर्यायवाची शब्दों के जोड़े लगाइए

1. तालाब	(क) कृपा
2. दया	(ख) वायु
3. हवा	(ग) जलाशय
4. दूषित	(घ) बेटा
5. पूत्र	(च) पेड़
6. वृक्ष	(छ) मलिन

उत्तर – 1-ग, 2-क, 3-ख, 4-छ, 5-घ, 6-च

प्रयास

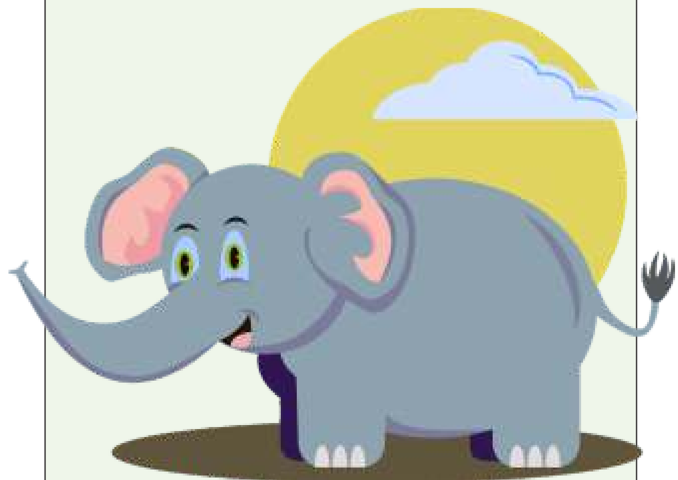

एक देश का प्रधान हाथी खरीदने के लिये दूसरे देश में गया। उसने एक हाथी को अपने पास से आराम से जाते हुए देखा। उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य हुआ कि इतने विशालकाय और शक्तिशाली जानवन को एक छोटी सी पतली सी रस्सी में बांध रखा है, जबकि यदि वह चाहे तो आसानी से स्वयं को इस बन्धन से मुक्त कर सकता है। प्रधान ने उत्सुकतावश हाथी को संभालने वाले से पूछा, 'यह कैसे हो सकता है कि इतना बड़ा हाथी एक छोटी सी पतली रस्सी से बांध रखा है जबकि वह चाहे तो आसानी से स्वयं को इस बंधन से मुक्त कर सकता है।' तब उस आदमी ने बताया कि हाथियों को हम शैशवावस्था में ही मजबूत रस्सियों से बांधकर रखते हैं। जब वे इन रस्सियों को तोड़े में विफल होते हैं तो फिर इनसे छूटने का प्रयास ही छोड़ देते है। बड़े होने पर भी इन्हें विश्वास हो जाता है कि इन रस्सियों से छूटना असम्भव है। तब हम इन्हें पतली रस्सियों से ही बांधकर रखते हैं।

जीवन में बहुत लोगों की वास्तविक स्थिति इन हाथियों जैसी होती है। जब वे कोई लक्ष्य निर्धारित कर उसे पाने के लिये प्रयास करते हैं तो आरम्भ में कुछ बाधाओं के कारण विफल रहते हैं। इससे वे लक्ष्य को असाध्य मान कर प्रयास करना ही छोड़ देते हैं। यह कहानी हमें यह सन्देश देती है कि हम चाहे कितनी ही बार विफल हों, लेकिन हमें प्रयास करना कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

झूले

*अब के बरस भेज भैया को बाबुल
सावन में लीजो बुलाए रे
लौटेंगी जब मेरे बचपन की सखियां
दीजो संदेशा भिजाए रे।*

*अम्बुवा तले फि से झूले पड़ेंगे
रिमझिम पड़ेंगी फुहारें*

*लौटेंगी फिर तेरे आंगन में बुबुल
सापन की ठंडी बहारें
छलके नयन मोरा कसके रे जियरा
बचपन की जब याद आए रे।*

*बैरन जवानी ने छीने खिलौने
और मेरी गुड़िया चुराई
बाबुल थी मैं तेरे नाज़ों की पाली
फिर क्यों हुई मैं पराई
बीते रे जुग कोई चिठिया न पाती
ना कोई नैहर से आए रे।।*

समाचार पत्र पंजी. संख्या : DELHIN/2018/76804
प्रकाशन तिथि : 01-07-2023
प्रेषण तिथि : 03-04 (मासिक)

डाक पंजीकरण संख्या : DL (C) 11/1437/2022-24
Posted at - New Delhi GPO, New Delhi-110001

मैगज़ीन पोस्ट रजिस्ट्रेशन
No. DL (DS) - 55/MP/2022-23-24

अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
के रचनात्मक सहयोग से

किताबवाले
द्वारा प्रकाशित

अमृत वाङ्मय
संपादक : बाल मुकुन्द पाण्डेय
राकेश मंजुल

स्वत्व जागरण श्रृंखला
संपादक : नरेन्द्र शुक्ल

भारत बोध श्रृंखला
संपादक : रत्नेश कुमार त्रिपाठी

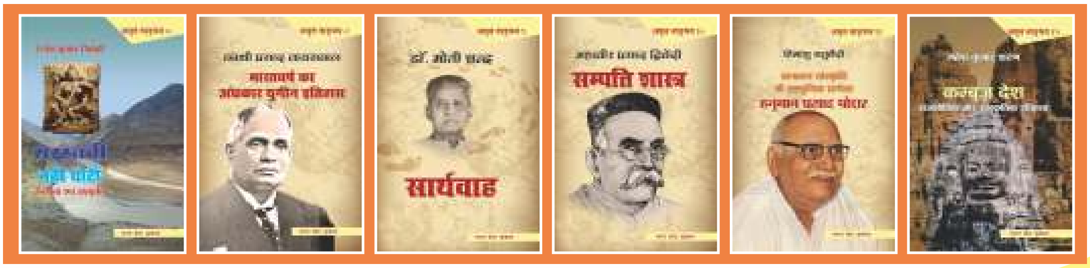

7/31, अंसारी रोड, दरियागंज, नयी दिल्ली-110002

वेबसाईट : www.kitabwale.com | ईमेल : kitabwale@gmail.com

प्रेषक : इंद्रप्रस्थ संवाद, 8 बी/6428-29, प्रथम तल,
आर्यसमाज रोड, देवनगर, नई दिल्ली-110005